डांग का पानी

अरुण तिवारी

सपोटरा डांग की 80 ग्रामसभाओं के जल संचयन प्रयासों को सादर समर्पित

कभी

बीहड़ और बागी ही डांग की पहचान थे, अब सपोटरा की डांग नई डगर पर चल निकला है। जो कभी बागी थे, वे अब पानी संजोने के काम लगे हैं। अब इनकी नई पहचान है - पुनर्जीवित नदी महेश्वरा ! इसका पानी, गांव खिजुरा, विरमका, रायबेली और सपोटरा की 80 ग्राम सभाएं... धान के लहलहाते खेत, बीरबानियों के चेहरे पर साझे का सुख और मोट्यारों के हाथ की कुदाल-फावड़ा और तगारी। नौनिहालों की नियमित पढ़ाई भी अब डांग की जिन्दगी में नई ही इबारत है। सपोटरा के डांग का पानी अब अंधेरी जिन्दगी में रोशनी का प्रतीक बन गया है... ऐसा प्रतीक, जो दूसरों को जिन्दगी दे सके।

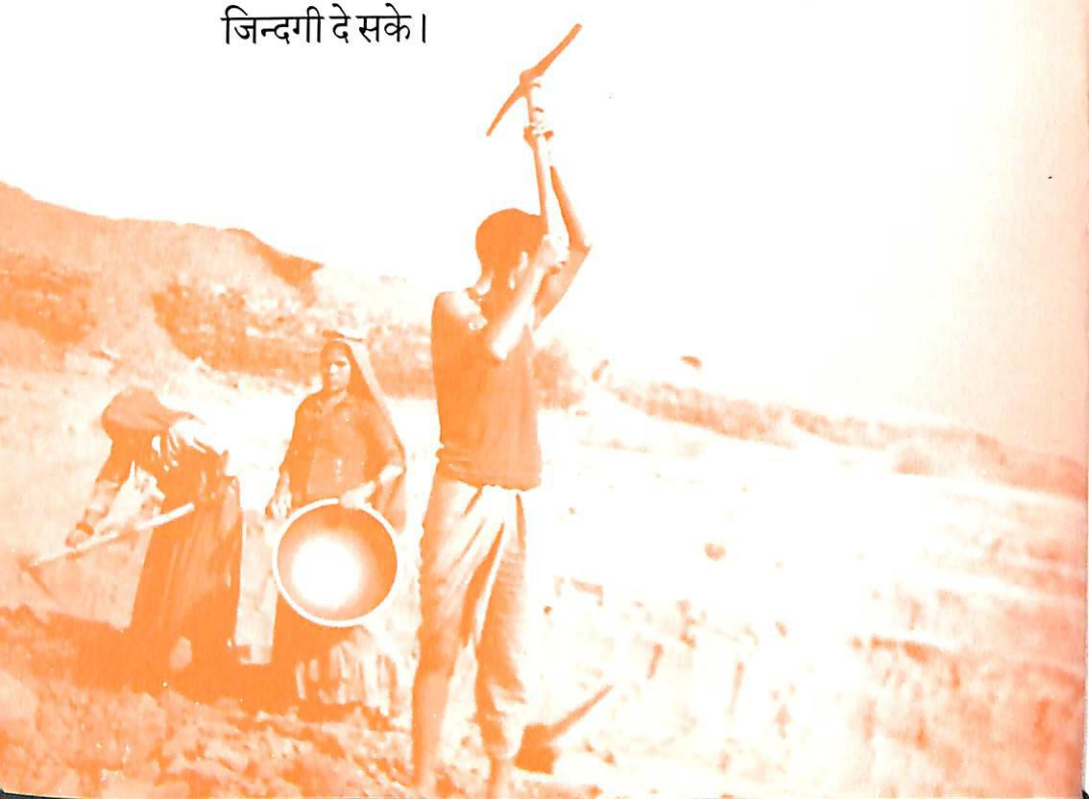

डांग का पानी

(सपोटरा की डांग में जल संचयन प्रयासों का दस्तावेज)

सामग्री-संकलन
राजनारायण मौर्य, रूपसिंह सरपंच
जगदीश गुर्जर, चमनसिंह

सहयोग
सतेन्द्र सिंह
देवयानी कुलकर्णी, विनोद कुमार

लेखक
अरुण तिवारी

प्रकाशक
तरुण भारत संघ
भीकमपुरा, वाया-थानागाजी
अलवर (राजस्थान)
फोन : 01465-225043
0141-2393178

watermantbs@yahoo.com
jalpurushtbs@gmail.com

सहयोग राशि
रु.60/-

प्रथम संस्करण: सितम्बर 2008

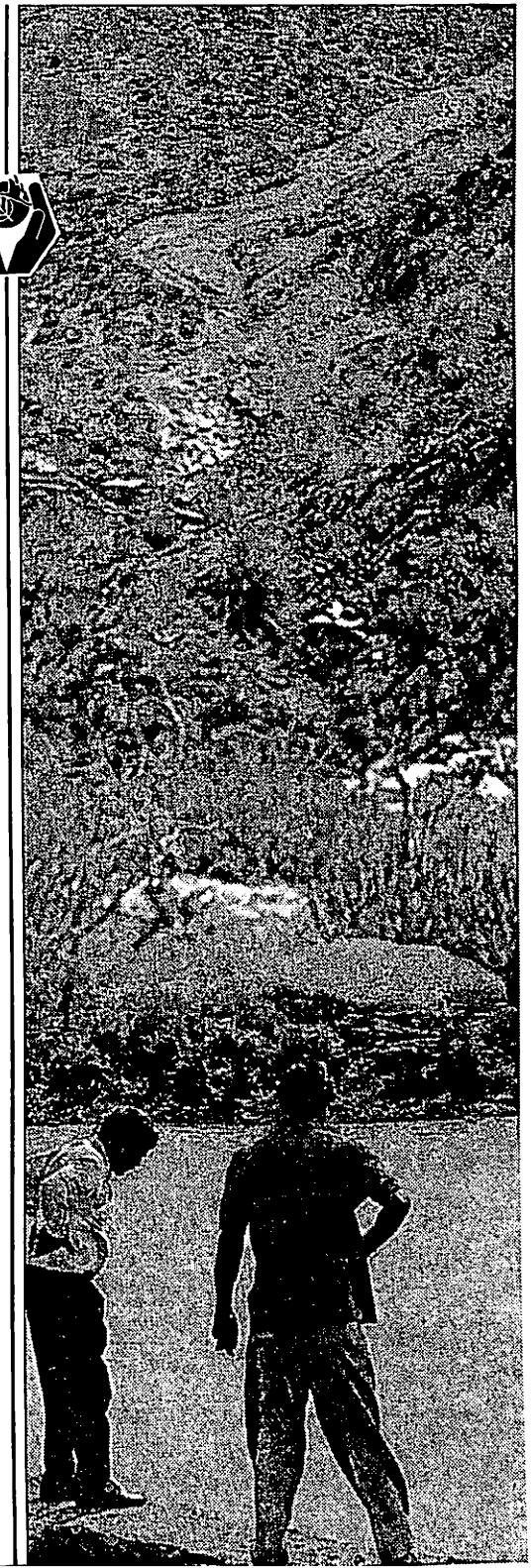

अनुक्रमणिका

1.	फैली बाजुओं वाला डांग	7
2.	डांग की विरासत	9
3.	डांग का न्याय	11
4.	सपोटरा की डांग	12
5.	बिगाड़ के कष्ट	17
6.	द टर्निंग प्वाइंट	19
7.	पानी का प्रताप	26
8.	खिजुरा की खनक	27
9.	रायबेली : पाल ने बढ़ाया प्रेम	30
10.	विरमका : भरी हथेलियों वाला गांव	32
11.	फिर बही नदी महेश्वरा	35
12.	आगे आईं बीरबानियां	38
13.	डांग की मांग	42
14.	निर्मित जल संरचनाएं	44

प्रस्तावना

हो सकता है कि डांग का भूगोल और किस्सागोई दूसरों को डराते हों, लेकिन इसने तरुण भारत संघ के कार्यकर्ताओं को हमेशा रिझाया ही।... क्योंकि तरुण भारत संघ हमेशा से ही मानता है कि जहां जितना बड़ा संकट हो, वहां एक दिन उतना ही बड़ा साझा बन सकता है। सभी जानते हैं कि डांग की विषमताएं बड़ी हैं; भूगोल की भी और अतीत की भी। यह बाहरी दुनिया की सोच का ही संकट है कि डांग का अतीत हमेशा इनका पीछा करता आया है। कोई बदलाव के लिए तैयार नहीं होता कि डांग के दिल में भी एक 'इंसान' हो सकता है, लेकिन सच यही है कि डांग का फैलाव बड़ा है तो दिल भी और न्याय भी। इसीलिए तरुण भारत संघ इस इलाके में काम कर सका। यह बात और है कि डांग की विषमताएं इन्हें सदा ही बगावत करने पर मजबूर करती रही हैं। तरुण भारत संघ की कोशिश खास है तो बस ! इतनी कि इसने इस ऊर्जा और असन्तोष को पानी के रचनात्मक काम में लगा दिया। नतीजा आपके सामने है। सपोटरा की डांग की 80 ग्रामसभाओं और तरुण भारत संघ के साझे से 369 जल संरचनाएं बनीं; 58 लाख से अधिक धनराशि उपयोग में आई। कई गांव सघन काम के उदाहरण बने हैं तो कई बदलाव के। लेकिन हमने कभी नहीं सोचा था कि इतनी विषम स्थितियों में मात्र 10 बरस के अन्दर छोटे-छोटे काम इतना बड़ा बदलाव लायेंगे कि एक नदी सदानीरा हो उठेगी। ये बड़ा काम हुआ। इसमें डांग की महिलाओं की बड़ी साझेदारी को तरुण भारत संघ नहीं भूल सकता।... आभारी है। 'डांग का पानी' अब सचमुच संजोने लायक बन गया है। इसके लिए दस्तावेज के लेखक अरुण तिवारी धन्यवाद के पात्र हैं और सराहना के भी। लेकिन सपोटरा.. डांग का बहुत छोटा सा इलाका है। अभी डांग की मांग बहुत है और जरूरत भी। अत: डांग में अभी बहुत कुछ किया जाना बाकी है।

राजेन्द्र सिंह

प्रेरित कलम

"हम इंसान नहीं, जानवर हैं। हे भगवान ! अगले जन्म में औरत न बनाना, चाहे जानवर बना देना। अगर औरत बना दिया तो फिर सपोटरा के डांग में जन्म मत देना।"

छोटी का दुख बताते इन शब्दों ने जनसत्ता की एक पत्रकार का पीछा कर एक पुस्तक का रूप ले लिया-'छोटी दरबी और नर्बदा'। यह अच्छी किताब मैंने भी पढ़ी। जिज्ञासा भी जगी, लेकिन जब आखों के सामने ग्राम खिजुरा, विरमका, रायबेली और रावतपुरा की दास्तान सामने आई : शराब-मुक्त हटियाकी की कहानी सुनी: पुनः सदानीरा हुई नदी महेश्वरा मोरेवाला ताल और सिद्ध सरोवर के दर्शन हुए; पानी से लबालब कुएं देखे; चटकदार ओढ़नी वाली बीरबानियों के मुंह में सोना-चांदी मढ़ा दांत..... बाजूबंद ! लम्ब-तड़ंग मोट्यारों (पुरुष) के पैरों में तुर्रेदार जूती और मुंह पर नोकदार मूंछें देखीं। जहां तक निगाह जाती है, वहां धान की लहलहाती फसल हरी-भरी धरती देखी और गीत सुना :

बदला घनन-घनन घन्नाये, गोरी लगाये धानी।
धानी के चावल, बिके पुड़िया में ।।

.....तो यह बात झूठी लगी, लेकिन यह बात झूठ है नहीं। सचमुच ! सपोटरा का डांग कभी बेकारी, बीमारी और बदहाली के शिकंजे में था। सचमुच यह बहुत कठिन इलाका है। राजस्थान की राजधानी जयपुर से मात्र 200 किलोमीटर की दूरी पर विकास की मुख्यधारा से कटी अलग-थलग गरीब-गुरबा आबादी। यहां लम्बे अरसे से प्रकृति का कोप तो रहा ही, इन्सानी बेसमझी और लालच ने भी बहुत बर्बादी की। लेकिन इसी गरीब-गुरबा आबादी और कुछ स्वयंसेवी के प्रयासों ने सपोटरा की डांग की धरती का चेहरा बदल दिया। यह बदलाव सचमुच प्रेरित करता है, जिसे देखकर मैं प्रेरित हुआ और 'डांग का पानी' अब आपके हाथों में है। उम्मीद करता हूं कि 'डांग का पानी' इस बात का दस्तावेज बनेगा कि कोई आबादी कमजोर नहीं होती; ग्राम गुरु सदा बड़ा होता है। यदि संकल्प पक्का हो तो हर मंजिल आसान हो जाती है और हर सूरज अपना!

फैली बाजुओं वाला डांग

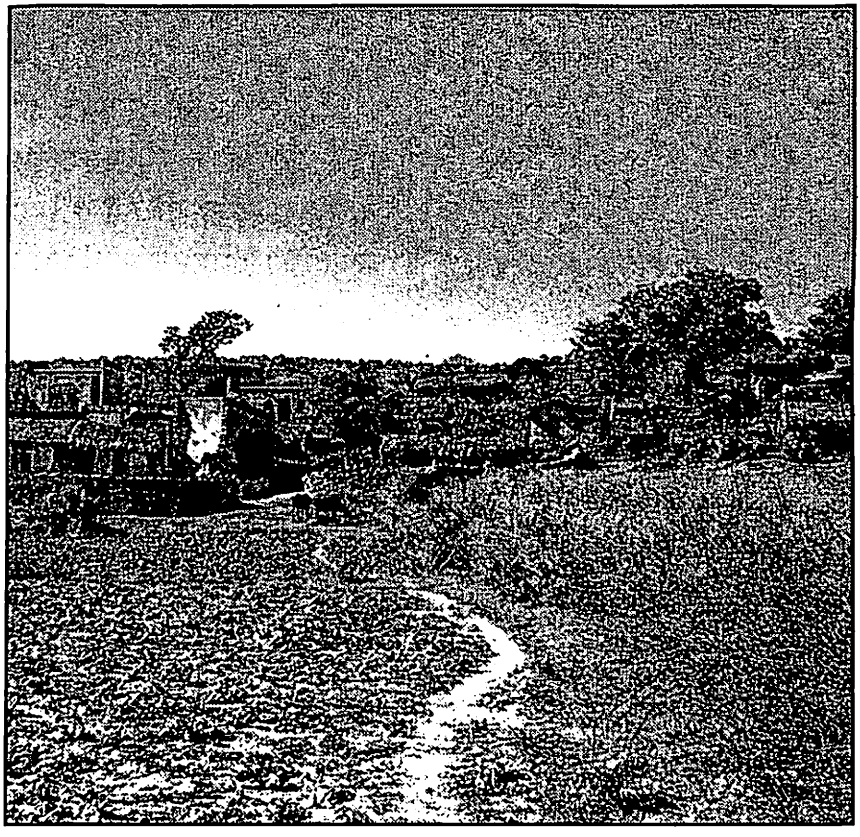

फैली बाजुओं वाली पहाड़ियों को 'डांग' कहते हैं। जिला सवाईमाधोपुर, धौलपुर और करौली के सवा तीन सौ से अधिक गांव इसी 'डांग' के कठिन इलाके में बसे हैं। सपोटरा इसी 'डांग' क्षेत्र की एक तहसील है और करौली-

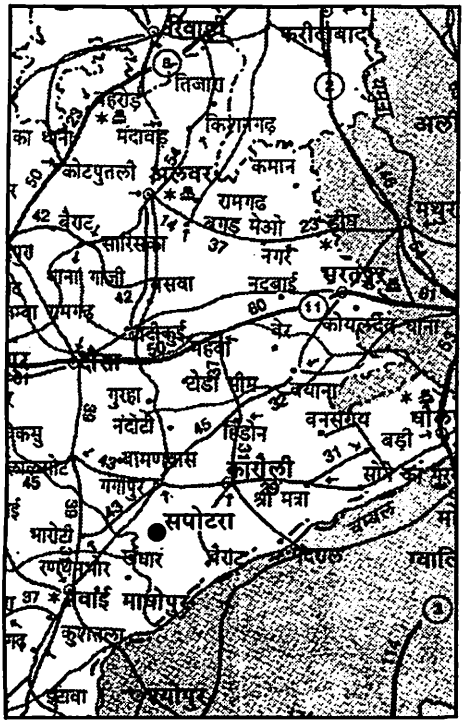

इसका जिला। राजस्थान के जिला करौली की एक सरहद मध्यप्रदेश के जिला मुरैना को छूती है और बाकी सरहदें राजस्थान के जिला धौलपुर, भरतपुर, दौसा और सवाईमाधोपुर से घिरी है।

दक्षिण-पूर्वी इलाके में चम्बल की धारा जिला करौली और मध्यप्रदेश के जिला मुरैना की सीमा रेखा बनाती है। पश्चिम से पूर्व की ओर बहती बनास नदी तथा मध्यप्रदेश के श्योपुर.... उत्तर से दक्षिण की ओर बहती एक धारा रामेश्वर के पास चम्बल नदी में मिलती है। रामेश्वर का संगम यहां के लिए एक तीर्थ ही है। कभी करौली जिला सवाईमाधोपुर का ही एक हिस्सा था, 19 जुलाई, 1997 में इसे एक जिले का दर्जा दिया गया।

यूं करौली कभी राजपूताने के नाम से विख्यात राजस्थान की 18 देशी रियासतों में से एक रियासत थी। वर्तमान करौली जिला..... पुरानी करौली व करौली रियासत के अलावा जयपुर राज्य के गंगापुर और हिण्डौन निजामत को मिलाकर बना है। यूं करौली में जैनमन्दिर (श्री महावीर जी), जामामस्जिद, ईदगाह, कैलादेवी तथा मेहंदीपुर बालाजी का मन्दिर.... सभी कुछ है, लेकिन तथ्य यह है कि सन् 1348 में यादव वंश के राजा अर्जुन पाल ने करौली कस्बे की स्थापना की।

डांग की विरासत

सच है कि 18वीं शताब्दी का करौली क्षेत्र एक साधन-संपन्न इलाका था। तिमनगढ़, उंटगिरी, मण्डरायल के किले और ऐतिहासिक मनीषियों की छतरियां इलाके का गौरव खुद-ब-खुद बयान करते हैं।

पानी

यदि सपोटरा की बात करें, तो डांग की पहाड़ियों के बीच जाने कितने झरने और छोटी धाराओं के चिह्न मिलते हैं।

इन छोटी धाराओं को ये 'नाला' कहते हैं। बसावट ऊपर है और नाले बहुत गहरे.... नीचे। इन्हीं नालों व बारिश के पानी को छोटे-छोटे पगारों-पालों से रोककर ये आस-पास खेती करते हैं। नालों की गहराई 'डांग' को जीविका देती है और दूसरे इन्हें 'बीहड़' का नाम देकर बिदक जाते हैं।

जोहड़

जिन्हें ये 'नूहान' कहते हैं.. आज भी डांग में लोगों के श्रम और प्राकृतिक समृद्धि के बचे-खुचे चिह्न हैं।

एक कि.मी. लम्बे सार्वजनिक ताल, उनसे छोटे चार-पांच परिवारों का साझा 'पोखर' और उनसे भी छोटे व्यक्तिगत 'पोखरा'। जोहड़.....जिन्हें ये 'नूहान' कहते हैं.. आज भी डांग में लोगों के श्रम और प्राकृतिक समृद्धि के बचे-खुचे चिह्न हैं।

जंगल

वन सम्पदा और समृद्धि का अन्दाजा लगाना हो, तो समझ सकते हैं कि रणथम्भौर अभयारण्य और कैलादेवी अभयारण्य को मिलाकर बना करीब 1000 किमी से ऊपर का जंगल डांग के इलाके में ही है। बाघ की दहाड़, तेंदुआ, चीतल, चिंकारा, जंगली सूअर, रीछ और अजगर की इंसानों से दोस्ती की दास्तान पुरानी है। संगमरमर से बना कैलादेवी का मन्दिर और इसमें मां कैला व चामुण्डा देवी की प्रतिमाएं अद्भुत हैं। सपोटरा के इलाके में स्थित कैलादेवी में मार्च-अप्रैल का मेला और लांगुरिया के भक्ति स्वर... सांस्कृतिक समृद्धि का अनुपम उदाहरण हैं।

बागी

चम्बल के बीहड़ भले ही दूसरों को डराते हों, लेकिन नामी बागी छविराम और मलखान सिंह इन्हीं बीहड़ों में गुम रहे। दुनिया कुछ भी कहे, लेकिन डांग के लोग बागियों को अपना संरक्षक ही मानते थे; क्योंकि ये बागी बीहड़ में बसी गरीब-गुरबा आबादी को कभी तंग नहीं करते थे। हां ! अंग्रेजी खजाने या किसी बाहरी से जो कुछ छीन कर लाते थे, उससे लोगों की रोजी-रोटी और शादी-बारात की जरूरतों में मदद ही करते थे। शायद इसीलिए समाज ने इन्हें कभी बुरा नहीं माना। बागियों के लिए 'डकैत' सम्बोधन का इस्तेमाल इन्हें आज भी बुरा लगता है। यहां के लोग पहलवानी के दंड और दांव की दास्तान बड़े गर्व के साथ बताते हैं.. न भी बतायें, तो बुर्जुगों की काठी खुद-ब-खुद सब कुछ कह देती है।

डांग का न्याय

डांगवासी कहते हैं कि कोई कुछ भी कहे, डांग कभी अन्याय नहीं करता। डांग के जंगल, नदी और पहाड़ों ने इन्हें यही सिखाया है। डांग में डांग वासियों का राज चलता है। लम्बे अरसे तक यहां सरकार नाम की कोई चीज नहीं थी। यहां का पंच ही यहां का परमेश्वर था सरकारी पंचायत वाला चुना हुआ पंच नहीं, बल्कि वह आदमी जिसकी बात गांव के लिए सर्वमान्य होती थी।

तरुण भारत संघ के साथी जगदीश गुर्जर न्याय की एक छोटी सी मिसाल सामने रखते हैं। जब मथुराका रायबेली नामक गांव में दो भाइयों के बेटे कभी हिसाब-किताब को लेकर आपस में उलझ गये, विवाद हुआ, लेकिन शान्त होकर अपने-अपने घर वापस चले गये। कुछ समय बाद दोनों की माँ आमने-सामने आकर खड़ी हुई और दोनों बेटों को फिर लड़ा दिया इनमें से एक मारा गया। पंचायत बैठी। 12 गांव के गुर्जर और मीणा इकट्ठे हुए। तब हत्या के दोषी को पेश किया गया। इसी बीच पुलिस आ पहुंची, उस दोषी को पुलिस के हाथों तब तक नहीं सौपा, जब तक पंचायत ने अपना फैसला नहीं सुना दिया। फैसला था-हत्या के दोषी को 12 गांव निकाला। 12 गांवों में उसके प्रवेश पर रोक लगाई गई, उसे निष्कासित कर दिया गया। साथ ही उन 12 गांव के बाशिंदों को सख्त हिदायत दी गई कि इन गावों का कोई भी ग्रामवासी उसके साथ रिश्ता-नाता, बातचीत अथवा किसी भी प्रकार का व्यवहार कायम नहीं करेगा। आज भी वह इन 12 गांवों से निष्कासित ही है। अब पुलिस प्रशासन की थोड़ी बहुत पैठ भले ही दिखाई देती हो, लेकिन आज भी डांग में आपसी झगड़ों और शिकायतों का फैसला कालस देव के मेले में ही होता है। कालस देव का मेला डांग के लिए न्याय का प्रतीक बन गया है। इसलिए कालस देव के सामने कोई झूठ नहीं बोलता।

सपोटरा की डांग

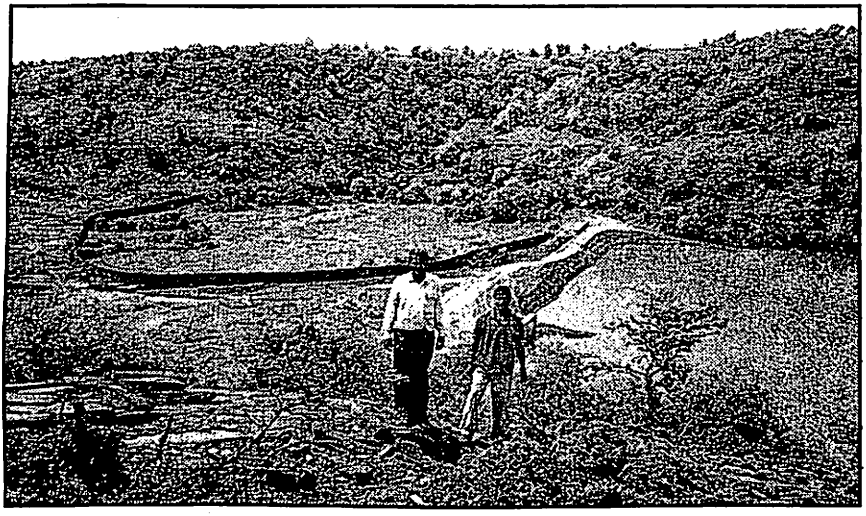

सपोटरा की डांग... सवाई माधोपुर, करौली के 'आंतरी' 'घटिया नीचे' और 'माल' के दूसरे इलाकों से अलग और कठिन है। पहाड़ी के ठीक नीचे तलहटी का इलाका 'आंतरी' कहलाता है। पहाड़ों के बीच की खुली मैदानी धरती के भीतर खारा पानी और ऊपर लबालब भरे पानी वाले क्षेत्र को ये 'माल' कहते हैं। डांग में सिर ऊपर उठाएं तो दूर-दूर तक बाजू फैलाये कठिन पहाड़ दिखाई देता है... इतना कठिन कि इन्हें देखते-देखते कोई भी अकेला पड़ गया आगन्तुक अपना माथा पकड़कर बैठ जाये कि हे भगवान ! यहां कोई इंसान कैसे रह सकता है ! धरती पर निगाह डालें, तो मिट्टी कम.... पत्थर के बड़े-बड़े टुकड़े अपना साम्राज्य जमाये ज्यादा दिखते हैं। सहज समझ में

नहीं आता कि इन पत्थरों पर खेती कैसे हो सकती है। इन पत्थरों को मिट्टी बनाने वाले हाथ सचमुच पत्थर के ही होंगे। हां ! ऐसा ही है लेकिन ताज्जुब नहीं, क्योंकि डांग की बसावट ने इन चट्टानों के साथ जीना सीख लिया है। शायद इसलिए डांग के इंसानों का सीना चट्टान सा फौलादी होता है। धरती की गहराई में उतरें, तो भी ऊपर बस ! थोड़ी सी मिट्टी और नीचे चट्टान ही चट्टान दिखाई देती है। आग्नेय, स्फटिक, अभ्रक, नाइसिस्ट, मिग्मा टाइटस की चट्टानें, सिलिकासेंड और चूना पत्थर यहां बहुतायत में हैं। पाटौर का पत्थर खोद-खोद यहां से जाने कहां जाता है ? शीशा, तांबा, लोहा.....जाने कितना ही खजाना यहां की धरती में समाया हुआ है। नीम, बबूल, बेरी, थोंक, रांझ, तेंदु, सालर, सन्था, आम, जामुन, खजेड़ा, पीपल और जाने कितने ही प्रकार के वृक्ष और चिचड़ा, पोलर, कालीलम्प.... जैसी अनगिनत जड़ी-बूटियों से यह इलाका समृद्ध रहा है।

क्यों लुटी समृद्धि ?

यह सच है कि सपोटरा के डांग की इस प्राकृतिक समृद्धि को यदि किसी ने जीवित रखा, तो वह बाघ और बागियों की दहाड़ें ही थीं। समझ में नहीं आता कि जहां मरने के बाद भी बागियों की 'मूंछ का पानी नहीं मरने' की कहावत आज भी जिन्दा हो, वहां आखिर पिछले 35-40 वर्षों में क्या हुआ कि जो डांग से उसका पानी छिन गया। बारिश तो पहले भी औसतन 68.92 सेंटीमीटर प्रतिवर्ष ही थी; वह भी साल में मात्र 35 दिन। धरती में पानी के रिसकर जाने की गुंजाइश पहले भी कम थी और अब भी, लेकिन बीच के दौर में इनके कुएं क्यों सूख गये ? जिन्होंने डांग की पहाड़ियों के फैले बाजुओं पर घर बनाया, उन्हें मई-जून

के महीने में अपने घरों पर ताला मारकर रहने के लिए नीचे 'आंतरी' या 'घटिया नीचे' क्यों आना पड़ा ? जो बागी कभी अन्याय और अनाचार के खिलाफ बगावत के झण्डाबरदार माने जाते थे, वे छोटी-मोटी लूटपाट, राहजनी और इससे भी नीचे मवेशियों की चोरी जैसे कुकृत्य पर क्यों उतर आये ? यहां के लोगों ने नई पढ़ाई नहीं पढ़ी, फिर भी क्यों नई पढ़ाई का दर्द इनके माथे आया ? ऐसे जाने कितने ही सवाल आपके मन में भी उठते होंगे, और इन्होंने मुझे भी व्यथित किया। निभैरा के सरपंच रूपसिंह इन सवालों का जवाब देते वक्त डांग के अतीत में खो जाते हैं। कहते हैं : "अब साब ! क्या बताऊं ? बच्चापन से मैंने ये तो देखा नहीं कि शासन ने कभी हित का कोई काम किया हो। डांग के ज्यादातर गांवों में आज भी न बिजली है, न सड़क, न नियमित पढ़ाई, न नियमित डाक्टर-नर्स.. न सरकारी दाई। मैंने सुना था कि जो कुपढ़ होते हैं, उनके यहां कोई नहीं आता.... न अधिकारी, न कर्मचारी। साब ! डांग अनपढ़ जरूर है, लेकिन कुपढ़ नहीं। डांग ने आखिर किसी का क्या बुरा किया है ? पर पता नहीं क्यों, यहां कोई नहीं आता.....न अधिकारी, न कर्मचारी ? लेकिन आये भी तो कैसे; कस्बे से कस्बे के मुख्य मार्गों को छोड़ दें, तो दूर के गांवों में कोई पक्की सड़क भी तो नहीं आती।"

साब ! डांग अनपढ़ जरूर है, लेकिन कुपढ़ नहीं।

जब मैंने रूपसिंह से बहस की कि ऐसा कैसे हो सकता है कि सरकार का यहां एक भी काम ठीक से न चल रहा हो.....उसने कुछ किया ही न हो, तो सरपंच रूपसिंह ने मेरी ओर एक निगाह देखा और अपनी यादों को टटोलने लगा।

बोला- "मुझे कुछ-कुछ याद है। जो काम अंग्रेजों ने नहीं किया, वह काम हमारी सरकार ने कर दिखाया। 1972 में

जंगलात ने यहां जंगल का ठेका दिया। ठेकेदार बाहरी ही थे। वे गांव में आकर खूब मीठी-मीठी बातें करते थे। वे डरते थे, तो सिर्फ कुछ बड़ी मूंछों व हथियारबंद नौजवानों से। तब हमारी समझ भी कुछ कम ही थी। जब ठेकेदारों ने काटना शुरू किया, तब हमारा जंगल बहुत सुंदर था। हम भी किसी न किसी रूप में सहयोगी हुए। क्या बताऊं साब जी ! बहुत बड़ी गलती हुई। दरअसल हमने कभी सोचा ही नहीं था कि वे कभी हमारे जंगलों को इतना बेदर्दी से काट डालेंगे। हम गांव के सीधे-सादे लोग.... हमें क्या मालूम था कि व्यापारी इतना स्वार्थी होता है; और फिर जंगल जायेगा तो पानी भी जायेगा... यह तो हमारी कल्पना में ही नहीं था। इस पर से दोहरी मार यह पड़ी कि डांग की धरती का खजाना भी सरकार की आंखों में चुभने लगा। उसने खदानें लीज पर दे दीं। जो बचा-खुचा पानी था, उसका भी सत्यानाश हो गया। हम खदानों पर काम करने को मजबूर हो गये। यह भी हमारी ही गलती थी, पर क्या करते ? थोड़ी-बहुत खेती और थोड़ी-बहुत मजदूरी... इन्हीं के भरोसे जिन्दगी थी।''

जंगल जायेगा तो पानी भी जायेगा... यह तो हमारी कल्पना में ही नहीं था। इस पर से दोहरी मार यह पड़ी कि डांग की धरती का खजाना भी सरकार की आंखों में चुभने लगा

यह बताते हुए रामजीलाल मीणा का सीना गज भर फूल जाता है कि पहले डांग में ज्यादातर परिवारों के पास 35-40 भैंसें थीं। कैलादेवी के आस-पास की आबादी की दूध की जरूरत भर आपूर्ति सपोटरा की डांग अकेले ही करती थी।

किन्तु यह सब अतीत की बात है।

आज तो डांग के ज्यादातर इलाकों के हिस्से में बदहाली ही है। दरअसल नई राजनीतिक व्यवस्था ने उसे वोट देने और बदले में

सब कुछ पा लेने का परावलम्बन सिखाया। इस तरह पानी, प्रकृति और प्रबन्धन के मामले में कभी स्वावलम्बी रहा सपोटरा की डांग का समाज परावलम्बी बन गया। धीरे-धीरे साझे की कड़ियां टूट गईं और जिनका भरोसा था, वे नेता भी वोट लेकर भूल गये। सच यह है कि डांग के जंगल और चट्टानों में बाहरी प्रवेश ने डांग की जिन्दगी में अपने ज्ञान, श्रम, साधन व शक्ति पर से भरोसा उठा दिया। इनकी जगह लालच, वैमनस्य और भटकाव ने ले ली। फिर एक वक्त ऐसा आया, जब नये पढ़े-लिखों ने ग्राम गुरु को 'गंवार' कहना शुरू किया और सचमुच ! एक दिन ये खुद को गंवार ही समझने लगे। इन्हें न अपने ज्ञान पर भरोसा रहा और न ही बाजुओं पर।

सचमुच ! एक दिन ये खुद को गंवार ही समझने लगे। इन्हें न अपने ज्ञान पर भरोसा रहा और न ही बाजुओं पर।

नतीजा ?

तालों की पालें टूट गईं। पीढ़ियों से चली आ रही पगारें कुछ वर्षो में ही ढह गईं। परिणामस्वरूप न कुएं में पानी बचा और न नदी की छोटी धाराओं में, जिन्हें ये 'नाला' कहते हैं। महेश्वरा जैसी जाने कितनी ही नदियां, जो कभी सदानीरा थीं.... बारह महीने बहती थीं..ऊपर के डांग से कूद-कूद पहले आंतरी और फिर माल में अठखेलियां खेलती थीं; बनास, चम्बल और अन्ततः यमुना नदी को समृद्ध करती थीं; वे सब खुद के प्रवाह को ही तरस गईं।

बिगाड़ के कष्ट

पानी गया, तो धरती की हरी चुनर भी गई और डांग की औरतों का सुकून भी। मकर संक्रान्ति आते-आते ऊपर डांग में पीने का पानी खत्म हो जाता था, तब अपनी गृहस्थी-मवेशी के साथ परिवार नीचे आ जाता था; तब तक.... जब तक कि बारिश की बूंदें आकर इन्हें फिर वापस ऊपर नहीं बुलाती थीं। जब पानी खूब था, तब एक घर मवेशियों का होता था और एक घर इंसानों का। मवेशियों के घर को ये 'गुवाड़ी' कहते थे। अकाल ने मवेशी और इंसान दोनों को एक साथ रहने को मजबूर किया। शायद इसे देखकर ही 'माल' क्षेत्र की रहने वाली छोटी ने कहा कि ये इंसान नहीं, जानवर हैं; बल्कि उससे भी बदतर, क्योंकि इंसान और जानवर दोनों के पीने का पानी और पेट के चारे की व्यवस्था इन्हें ही करनी पड़ती थी। अभी कुछ गांवों के नाम विरमाकी, हटियाकी आदि सुनते हैं। पहले ये विरमा और हटियाकी गांवों की गुवाड़ियां ही थीं। यहां मवेशी ही बंधते थे।

अकाल ने मवेशी और इंसान दोनों को एक साथ रहने को मजबूर किया। शायद छोटी ने इसीलिए कहा कि ये इंसान नहीं, जानवर हैं।

समझ लीजिये कि जब कोई समाज अपने कल्याण के लिए किसी दूसरे की ओर ताकने लगे, तो वह दिन उसकी गिरावट और बर्बादी की शुरुआत होता है।

समय ने बदलकर इन्हें इंसानों और मवेशियों का साझा बसेरा बना दिया। पानी गया, तो खेती को भी साथ छोड़ना ही था, सो वह भी गई। जहां कभी धान भी खूब था और खाने को दूसरे अनाज भी, वहां अब एक महीने के बाद अगले महीने की रोटी की चिन्ता होने लगी। मवेशी पहले भी थे, लेकिन अब मवेशियों पर निर्भरता और बढ़ गई.... । किन्तु जब पानी ही नहीं, तो चारा कहां से हो और मवेशी भी कहां तक साथ दें ? जो कस्बे कभी दूध के लिए सपोटरा की डांग पर निर्भर थे, अब सपोटरा अपनी रोटी के लिए उनकी ओर ताकने लगा। समझ लीजिये कि जब कोई समाज अपने कल्याण के लिए किसी दूसरे की ओर ताकने लगे, तो वह दिन उसकी गिरावट और बर्बादी की असली शुरुआत होता है।

डांग में यही हुआ

मोट्यारों में जो बुराइयां कभी नहीं थीं, वे भी एक-एक कर पैठ बनाती गईं। धीरे-धीरे आदमियों ने मजदूरी-दाकड़ी के लिए दूसरे इलाकों में रुख किया। इस पूरे दौर में कुछ ने काम बदले, कुछ ने ठिकाने और कुछ का तो हाल ही बदल गया। वे बेहाल हो गये। जो दलित भूमिहीन थे, उनकी तो जैसे किस्मत ही फूट गई। पत्थर की खदानों में काम करते-करते वे पत्थर हो गये। टी.बी. की बीमारी उन्हें लील गई। कोई ताज्जुब नहीं कि यहां अनुसूचित जाति की हर चौथी महिला विधवा है।

कोई ताज्जुब नहीं कि यहां अनुसूचित जाति की हर चौथी महिला विधवा है।

द टर्निंग प्वाइंट

डांग की किस्मत अच्छी थी। छोटेलाल गुर्जर नाम का एक नौजवान 1994 में घर से भागकर गंगापुर के अज्ञातवास पर आया। वहां कुछ मेहनत-मजदूरी की, फिर सपोटरा की डांग में छोटा-मोटा पढ़ाने का काम किया। एक दिन वह लौटकर अपने गांव अलवर गया। उन दिनों वहां 'तरुण भारत संघ' नाम की एक संस्था पानी के काम में लगी थी। जंगल और खनन माफिया से टक्कर ले रही थी। वहां पानी के काम के नतीजे आने लगे थे। समाज की समझ और ताकत दोनों सिर पर चढ़कर बोलने लगी थी। खनन और जंगल..... दोनों का माफिया कदम पीछे हटाने पर मजबूर था। नतीजा यह हुआ कि 'तरुण भारत संघ' छोटेलाल गुर्जर का आदर्श बन गया और छोटेलाल.... इसके एक जिम्मेदार कार्यकर्ता बन गए।

छोटेलाल ने डांग का दुर्गम इलाका देखा था। डांग का दर्द और तकलीफ छोटेलाल के जेहन में पूरी तरह उतर गये थे। जैसे छोटी के शब्दों ने एक पत्रकार का पीछा किया, वैसे ही डांग के दर्द ने छोटेलाल का। छोटेलाल ने तरुण भारत संघ की बैठकों में कई बार डांग के इस दर्द का जिक्र किया। तरुण भारत संघ के

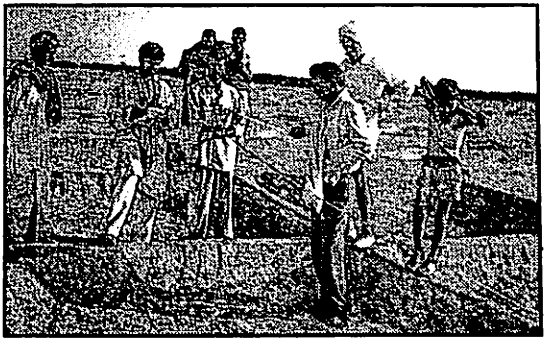

राजेन्द्र सिंह ने तो हमेशा वहीं रोशनी देखी, जहां अंधेरा बहुत गहरा था। डांग का इलाका भी ऐसा ही था। मई 1997 में तरुण भारत संघ के चमनसिंह इलाका देखने गए। पहली निगाह कैलादेवी से 9 किमी. दूर लखरुकी के सिंघाड़े वाला ताल पर गई।

मुखिया राजेन्द्र सिंह ने तो हमेशा वहीं रोशनी देखी, जहां अंधेरा बहुत गहरा था। डांग का इलाका भी ऐसा ही था। मई 1997 में तरुण भारत संघ के कार्यकर्ता चमनसिंह इलाका देखने गए। पहली निगाह कैलादेवी से 9 किलोमीटर दूर लखरुकी के सिंघाड़े वाला ताल पर गई। एक वर्ष बाद छोटेलाल गुर्जर और गोवर्धन पंडित एक निश्चय के साथ एक दिन डांग के कठिन भूगोल और जिन्दगी के बीच पानी संजोने का सपना लिये चल पड़े।

यह था जुलाई, 1998.. पांच साल के अकाल से पहले का वर्ष ! लेकिन डांग में काम करना कभी आसान नहीं रहा; न सरकार के लिए और न संस्थाओं के लिए। इनके साथ-साथ इस बीच कर्णसिंह नाम के एक साथी यहां आते-जाते रहे। हटियाकी और मेरोची ढाणियां इनका शुरुआती ठिकाना बनीं। लगातार समझाइश के बाद 1999 में पहली बार यहां का समाज एक बार फिर से एकजुट हुआ। संस्था और समाज के साझे की पहली जलसंरचना 1999 में ही बनी। स्थान था-गांव हटियाकी। गांव ने एक-चौथाई दिया, संस्था ने तीन-चौथाई। तब तक तरुण भारत संघ के श्रवण पंडित भी इस काम में आ जुटे। बाद में समयसिंह, छाजूराम, रामसिंह, मांगेलाल, भजन सिंह समेत कई कार्यकर्ता इस काम में लगे।

निर्माण में श्रम के भुगतान की जिम्मेदारी श्रवण पंडित की ही थी। इससे पहले कि हटियाकी का काम अपनी चमक दूसरे गांवों में बिखेरता या इसके नतीजे सामने आते; बन्नू सैनी नामक एक नामी हथियारबंद ने चिट्ठी लिखकर कहा-"जो भुगतान करते हो, उसमें से हमें हमारी चौथ दो; नहीं तो काम बंद कर दो।" चौथ यानी चौथाई हिस्सा.... तब यहां अपने को बागी कहने वाले ये हथियारबंद लोग जंगल-खान व दूसरे ठेकेदारों से चौथ वसूलते थे। अतः श्रवण पंडित के नाम भी फरमान जारी हुआ। श्रवण ने राय की। जवाब में लिखा-"यह किसी ठेकेदार का नहीं, गांव और संस्था का साझा काम है। संस्था इससे कमाकर कुछ नहीं ले जायेगी, न ही संस्था के कार्यकर्ताओं के हिस्से में ही कुछ आयेगा; बल्कि इससे तो गांव के कुएं में पानी ही लौटेगाः खेती के साधन ही बनेंगे।" गांव के लोगों ने भी समझाइश की कि यह तो गांव का ही काम है और संस्था के कार्यकर्ता भी बहुत छोटी तनख्वाह वाले लोग हैं। ये तो गांव का ही भला करने आये हैं।

श्रवण पंडित बताते हैं-"हमें ताज्जुब हुआ कि बन्नूसैनी ने न सिर्फ अपना फरमान वापस लिया, बल्कि हमें मदद करने का वादा भी किया। उसके बाद से तो आये दिन ऐसे लोगों से मुलाकात होती थी, लेकिन वे कभी हमारा नुकसान नहीं करते थे। बाद में पता चला कि यह भी अपने साथियों को बन्नूसैनी का ही फरमान था। इसीलिए जिन्हें दूसरे लोग असामाजिक तत्व कहते हैं, उन्होंने हमारे काम में कभी बाधा नहीं पहुंचाई।"

जिन्हें दूसरे लोग असामाजिक तत्व कहते हैं, उन्होंने हमारे काम में कभी बाधा नहीं पहुंचाई।

जब मैंने ऐसे एक आदमी से उसका नाम पूछा और फोटो खिचवाने का आग्रह किया तो उसने हाथ जोड़ लिये। मेरी समझ में नहीं आया कि उसने ऐसा क्यों किया ?

इससे भी बड़ा ताज्जुब यह जानकर हुआ कि बाद के वर्षों में ऐसे कई लोग पानी के काम में सबसे बड़े मददगार बने। इनमें से कई संस्था की बैठकों में शामिल होते.... जिम्मेदारी लेते और काम को अंजाम देते। जब मैंने ऐसे एक आदमी से उसका नाम पूछा और फोटो खिचवाने का आग्रह किया तो उसने हाथ जोड़ लिये। मेरी समझ में नहीं आया कि उसने ऐसा क्यों किया ? पता चला कि इन्हें इनका अतीत डराता है। ये उसे बुरा समझते हैं। उस परिचय और सम्बोधन को सुनना भी नहीं चाहते। एक बार एक पत्रकार ने उन्हें फुसलाकर इनके हाथ में बंदूक और कमर पर कारतूस की पेटी बंधवाकर फोटो खींची। जब ये फोटो पत्रिका में छपकर आई, तो डकैत से सामाजिक कार्यकर्ता बन चुके एक नौजवान को बहुत बुरा लगा। ठीक ही था। कारण कि इन्हें इनका वर्तमान प्यारा है। ये अपने वर्तमान पर गर्व करते हैं। हमारे लिए इतना ही काफी है। अब इन्हें इनका समाज भी अपना हीरो मानता है। अच्छा है ! इन्हें किसी की बुरी निगाह न लगे। इसीलिए हम यहां इनके नाम का उल्लेख करने का लालच भी त्याग रहे हैं।

समाधान में साझा

ऐसे खट्टे-मीठे अनुभवों के बीच वर्ष 1999 का एक ऐसा समय आया, जब बारिश की बूंदें एक बार फिर डांग से रूठ गईं। डांग

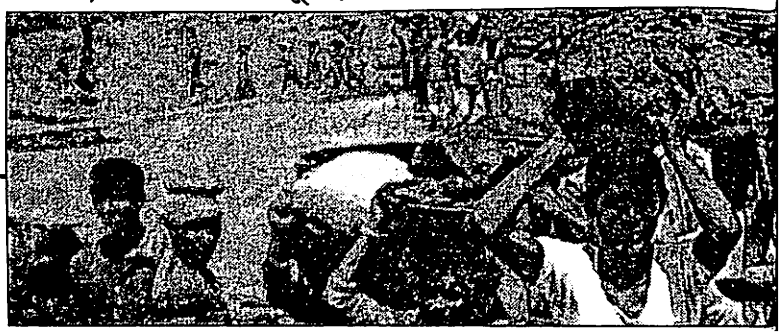

में अकाल पड़ा। यह अकाल पूरे 5 साल का था..... वर्ष 1999 से लेकर 2003 तक। जब समय साझे संकट का हो, तो समाधान में साझा सहज हो जाता है। अकाल राहत के लिए सरकार और कई सामाजिक संस्थायें इस इलाके में आईं; लेकिन तरुण भारत संघ अकाल राहत से भी ज्यादा अकाल निवारण में यकीन रखता है। अतः उसने अपनी कोशिशें बढ़ा दीं।

जब समय साझे संकट का हो, तो समाधान में साझा सहज हो जाता है। अकाल राहत के लिए सरकार और कई सामाजिक संस्थायें इस इलाके में आईं; लेकिन तरुण भारत संघ अकाल राहत से भी ज्यादा अकाल निवारण में यकीन रखता है। अतः उसने अपनी कोशिशें बढ़ा दीं।

छाजूराम, जगदीश गुर्जर, चमनसिंह, कर्णसिंह गुर्जर समेत कई नौजवान कार्यकर्ता पूरी ताकत के साथ अपने काम में जुट गये। पानी की कई छोटी-छोटी संरचनाएं डांग के इलाके में बनाईं।..... इनकी सूची इस किताब के आखिरी पन्नों में दर्ज है। तरुण भारत संघ के कार्यकर्ता जगह-जगह घूमे; समझाइश की। जहां जरूरत ज्यादा थी, उन स्थानों पर सार्वजनिक जल संरचनाओं को प्राथमिकता दी। संकट था, सो गांव में समझ भी बनी; लेकिन संस्था और इसके काम पर डांगवासियों का विश्वास तब पूरी तरह पुख्ता हो गया, जब ये अपने सवालों का जवाब तलाशते-तलाशते 50-55 की संख्या में एक दिन जयपुर के गांव नीमी चले आये। यह था वर्ष -2001।

2001 - द टर्निंग प्वाइंट

नीमी आने वालों में एक थे- 58 बरस में भी जवान अंगद गुर्जर। उन दिनों विज्ञान पर्यावरण केन्द्र, दिल्ली और तरुण भारत संघ की पहल पर नीमी में एक जल सम्मेलन चल रहा था। इसी जल सम्मेलन में पहली बार जलबिरादरी बनाने का विचार सामने आया। यह सम्मेलन इस दृष्टि से भी ऐतिहासिक था और इस दृष्टि से भी कि डांग से आये अंगद गुर्जर ने इस सम्मेलन में एक बात गाठ बांध ली थी : "जहां पानी दौड़ता हैः वहां उसे चलना सिखाओ; जहां पानी चलता हो; वहां उसे रेंगना सिखाआ; जब पानी रेंगने लगे; तो उसे पकड़कर धरती के पेट में बिठाओ; ताकि उसे सूरज की नजर न लगे; जब जरूरत पड़े, तब उतना पानी धरती से निकालकर अपनी जिन्दगी चलाओ।" ये समझ गये कि बाढ़ और सुखाड़ दोनों की बंदी की जा सकती है। जो वे हमेशा से करते आये.... ताल, नूहान, पोखर, पोखरा और पगारे.... यही सब डांग की जिन्दगी है। इनसे डांग की समृद्धि भी वापस लौट सकती है और पलायन के लिए आगे बढ़े कदम भी।

इसी जल सम्मेलन में पहली बार जलबिरादरी बनाने का विचार सामने आया। यह सम्मेलन इस दृष्टि से भी ऐतिहासिक था और इस दृष्टि से भी कि डांग से आये अंगद गुर्जर ने इस सम्मेलन में एक बात गांठ बांध ली थी

इस समूह में साथ गये लोगों में एक थे- 62 वर्ष के कल्याण गुर्जर। कल्याण गुर्जर आज पानी के अच्छे कार्यकर्ताओं में से एक हैं। वह भी नीमी जल सम्मेलन से एक सूत्र वाक्य लेकर लौटे कि जोहड़-बाढ़ और सुखाड़ दोनों का इलाज है। यह प्रसंग बताते हुए आज भी कल्याण सिंह की आखों में एक अलग चमक और मन में एक अलग उमंग सी

दिखाई पड़ती है। कल्याण गुर्जर सपोटरा के एक गांव - खिजुरा के रहने वाले हैं। वह बताते हैं कि सम्मेलन में आकर ही उन्होंने जाना कि पानी के छोटे-छोटे काम कैसे जिन्दगी में बड़ा बदलाव कर सकते हैं। उन्होंने कभी दिल्ली और जयपुर की सब्जी मंडियों में पल्लेदारी का काम करने गये नीमी के किसानों को उनके गांव लौटते और गांव में सब्जी का बेमिसाल उत्पादन कर सेठों के ट्रकों को रोजगार देते देखा। वहां डांग से गये किसान कोई एक या दो नहीं थे, एक पूरा समूह था। अतः सबने अपनी आखों से देखा। अविश्वास करने लायक कोई बात ही नहीं थी।

कल्याण गुर्जर ने खिजुरा लौटकर अपनी आखों देखी गांव वालों को सुनाई। लोग भौंचक्क थे। कल्याण समाज की जिम्मेदारी.... हकदारी.... जल-जंगल-जमीन और निजी नहीं, सामुदायिक.....जाने कैसे-कैसे शब्द दोहराता रहता था। नौजवानों ने समझा कि बूढ़ा सठिया गया है। शुरू-शुरू में लोगों की कुछ समझ में नहीं आया, लेकिन जब बाद में आस-पास के गांवों से सम्मेलन में गये 50-55 लोगों की जुबान से यही बातें सुनाई पड़ने लगीं, तो गांव वालों की जिज्ञासा भी बढ़ी और गम्भीरता भी।

नीमी जल सम्मेलन के प्रभाव के कुछ ऐसे ही किस्से सपोटरा की डांग के कई गांवों में आप सुन सकते हैं। कहना न होगा कि वर्ष 2001 डांग में पानी के काम की दृष्टि से टर्निंग प्वाइंट था। इससे समाज और संस्था दोनों को ऊर्जा मिली.. जिसने आगे चलकर धरती का चेहरा बदल दिया।

नीमी जल सम्मेलन के प्रभाव के कुछ ऐसे ही किस्से सपोटरा की डांग के कई गांवों में आप सुन सकते हैं।

पानी का प्रताप

अगले दो बरस तरुण भारत संघ ने गांव के साथ पानी के काम में खूब साझा किया। करीब 35 गांव इस साझे यज्ञ के होता बने। यज्ञ में हविष्य डालने वाले को 'होता' कहते हैं। कह सकते हैं कि इनमें से 11 गांवों में पानी का सघन काम हुआ। खिजुरा, विरमका, रायबेली और रावतपुरा जैसे गांव आज बड़े बदलाव का प्रतीक बन गये हैं। शुरुआत में जहां गांव पानी के काम में एक-चौथाई हिस्सेदारी करता था, धीरे-धीरे उसका अंशदान बढ़कर आधा हो गया। अब इन गांवों में पानी और चारे की कमी के कारण कोई पलायन नहीं करता। खेती की सिंचित कृषि भूमि भी बढ़ी है और आय भी। आय बढ़ी, तो रास्ता भी आगे बढ़ा और सपना भी। गांव में प्राइमरी स्कूल बस नाम के हैं। सरकारी गुरुजी वर्ष में एक-दो बार ही दिखाई देते हैं। शिकायत करो, तो मास्टर जी का तबादला हो जाता है और फिर स्कूल में कोई मास्टर नहीं आता। ऐसे में बच्चे कहां पढ़ें ? जिनकी सामर्थ्य बढ़ गई; वे अब बच्चों को पढ़ने के लिए दूर कैलादेवी के स्कूल में भेजने लगे हैं। दूध भी अब आय का एक अच्छा साधन बन गया है।

अब तक तरुण भारत संघ (रु. 35,53,300) और सपोटरा डांग के गांवों (रु. 22,81,600) के साझे से बनी इकाइयों का आंकड़ा चाहे, सुनने में छोटा ही हो.....महज 369 ! लेकिन इसने बड़े बदलाव दिए और बड़ी प्रेरणा भी। अंगद, दिनेश, जगन्नाथ शर्मा, रामजीलाल मीणा, रूपे और रामेश्वर इसी काम की प्रेरणा से प्रेरित डांग के निवासी हैं। ये काम अब कइयों को प्रेरित करने लायक बन गया है।

इसी काम से प्रेरित होकर राजीव गांधी फाउंडेशन, नई दिल्ली ने इस इलाके में काम करने की इच्छा जाहिर की। तरुण भारत संघ ने अपने हाथ उन्हें सौंप दिये। चमन सिंह, जगदीश गुर्जर, कर्णसिंह और भी कई ऊर्जावान साथी आज डांग के इलाके में पानी के काम को आगे बढ़ा रहे हैं।

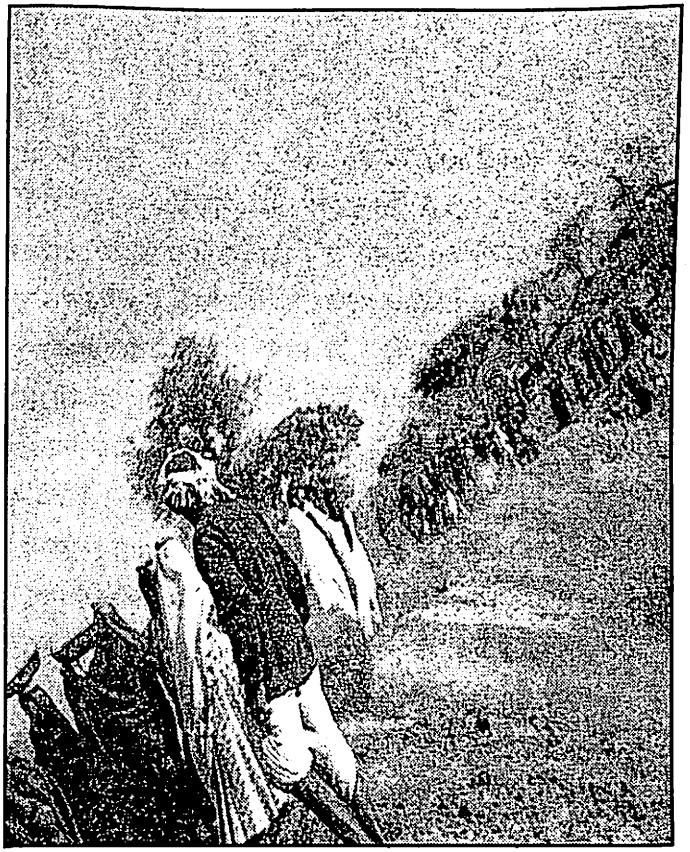

खिजुरा की खनक

सपोटरा की डांग में एक गांव है- खिजुरा। करौली जिला मुख्यालय से 42 कि.मी. दूर दक्षिण में स्थित यह गांव कैलादेवी अभयारण्य और रणथम्भौर बाघ परियोजना के बफर जोन में आता है। खजूर के पेड़ों के कारण लोग इसे भले ही खिजुरा गांव कहते हों, लेकिन यह मूल खिजुरा गांव है नहीं। मूल खिजुरा गांव 1853 में आबाद हुआ था। एक सौ वर्ष बीतने पर गांव ने अपनी जगह बदली और 1953 में अपनी पुरानी ड्योढ़ी छोड़कर वर्तमान स्थान पर आकर बस गया। गांव वाले बताते हैं कि 1953 में पुराने खिजुरा से पांच परिवारों के 12 नई उम्र के लोग ही यहां आये थे। आज खिजुरा में 32 परिवार रहते हैं। आज खिजुरा जल स्वावलम्बन से ग्राम स्वावलम्बन का प्रतीक है।

डांग के जो लोग 2001 के नीमी सम्मेलन में गये, उनमें कल्याण गुर्जर भी एक थे। 2001 खिजुरा के लिए भी टर्निंग प्वाइंट था। वे गांव के एक सपने को जानते थे। खिजुरा पिछले 37 बरस से इंतजार कर रहा था कि मोरेवाला ताल की पालें कब मजबूत बनें और कब उनकी काश्तकारी में रंग आये। इस सपने का जिक्र कभी कल्याण गुर्जर ने अपने समधी कमल गुर्जर से किया। कमल गुर्जर हटियाकी गांव के हैं। कमल गुर्जर तरुण भारत संघ के कार्यकर्ताओं से 1998 से ही जुड़े हुए थे। लोग इन्हें भगत जी कहते हैं। भगत जी और कल्याण गुर्जर की रिश्तेदारी विचारों के आदान-प्रदान में बदली। इन्होंने अपने गांव में पानी के काम की कहानी खिजुरा के सामने रखी और खिजुरा ने अपना सपना बताया। वर्ष -2000 में तरुण भारत संघ कार्यकर्ता इस गांव में आये। लोगों से बैठक की। पानी के काम के लिए ग्रामसभा बनी। गांव एक साथ चौपाल पर बैठा। हर परिवार से उसकी जमीन के रकबे के मुताबिक श्रमदान का संकल्प हुआ। 1963 में निभैरा ग्राम पंचायत के सरपंच शिवनारायण ने 2200 रुपये की छोटी सी मदद से मोरेवाला ताल पर एक छोटी से मेंढ़बन्दी से जिस सपने की शुरुआत की थी, वर्ष 2000 में खिजुरा एक बार फिर काम करने के लिए उठ खड़ा हुआ। देवउठनी ग्यारस का अबूझ सावा वह शुभ् दिन बना। रामसिंह, रमेश, गिरधारी, हरिचरण और प्रभु.....इन पांच लोगों की निगरानी समिति बनी। धीमी गति से काम शुरू हुआ। 2001 के नीमी सम्मेलन ने उसमें प्राण फूंके। कुछ गांव वालों की ललक और कुछ तरुण भारत संघ का

1963 में निभैरा ग्राम पंचायत के सरपंच शिवनारायण ने 2200 रुपये की छोटी सी मदद से मोरेवाला तालाब पर एक छोटी से मेंढ़बन्दी से जिस सपने की शुरुआत की थी, वर्ष 2000 में खिजुरा एक बार फिर काम करने के लिए उठ खड़ा हुआ।

प्रोत्साहन.... 2002 में मोरेवाला ताल बनकर पूरा हो गया। करीब 40 लोगों की 140 बीघा जमीन के मुताबिक प्रति बीघा 1500 रुपये का श्रमदान लगा। रामजीलाल भोपा का परिवार यदि श्रमदान करने में असमर्थ था, तो उसने अपने हिस्से की राशि नकद भुगतान कर चुका दी।

जब हम अच्छा काम करते हैं, तो रामजी भी अच्छी कृपा करता है। 2003 में चाहे कहीं अकाल रहा हो, लेकिन मोरेवाला ताल ने आस-पास बरसी अपने हिस्से की हर बूंद को रोक लिया। एक साथ इतना सारा पानी देखकर खिजुरा उल्लास से सराबोर भी था और चिन्तित भी कि इतना बड़ा ताल है, कहीं टूट गया तो ? क्या मोट्यार.... क्या बीरबानियां.... अपना फावड़ा-तगारी ले ताल की पाल पर ही जुटे रहते। नतीजा यह हुआ कि मोरेवाला ताल गांव के अपने श्रम और अपने ज्ञान से स्वावलम्बन की मिसाल बन गया। जितनी भी मेहनत लगी थी, रामजी ने उससे ज्यादा नतीजा दिया। पहले ही साल प्रति बीघा चार क्विंटल धान की पैदावार हुई। अन्दाज लगा सकते हैं कि 140 बीघा में 560 क्विंटल और 1000 रुपये प्रति क्विंटल के हिसाब से 5 लाख 60 हजार रुपये की बिक्री। खिजुरा अपने ज्ञान.... अपने श्रम का इतना बड़ा नतीजा देखकर एक बार तो खुद चमत्कृत हो उठा और बाद में खिजुरा को देख दूसरे भी।

वह दिन है और वर्ष 2008.... इस पुस्तक को लिखे जाने का वर्ष ! खिजुरा हाथ पर हाथ रखकर नहीं बैठा। खिजुरा ने श्रम को अपना मंदिर मान लिया और फावड़ा-तगारी को अपना देवता। आज जहां तक निगाह जाती है, खिजुरा में धान की लहलहाती फसल दिखती है, आस-पास सघन जंगल। बड़ों के चेहरे आत्मविश्वास से दमक रहे हैं और बच्चों के हाथ में अब कलम है। पानी के काम से निकली यह एक नई इबारत है ! नया ककहरा !!

रायबेली : पाल ने बढ़ाया प्रेम

कैलादेवी से कर्णपुर जाने वाले रोड पर खिजुरा गांव से दो कि.मी. उत्तर दिशा में स्थित एक छोटा सा गांव है रायबेली 35 परिवार की छोटी सी आबादी ! रायबेली में भी पानी का काम रिश्तेदारी के माध्यम से ही पहुंचा। खिजुरा और हटिया की जाकर यहां के हरिसिंह, नवल सिंह और कन्हैया ने पानी के काम को देखा। रावतपुरा और चौंडक्या भी गये और वहां से अपने गांव में भी ऐसा ही कुछ करने की प्रेरणा लेकर लौटे। बस ! पानी के काम के लिए श्रमदान का पुख्ता इंतजाम करना था।

तरुण भारत संघ के चमन सिंह, जगदीश गुर्जर और कर्णसिंह ने गांव को यह तो साफ किया कि तरुण भारत संघ कोई धन देने वाली संस्था नहीं हैंः लेकिन यह भी भरोसा दिलाया कि जब हम कोई अच्छा काम करते हैं, तो रामजी खुद-ब-खुद रास्ते बना देता है और मदद भी कहीं न कहीं से आ ही जाती है। तब तक जोहड़ वाले बाबा के रूप में राजेन्द्र सिंह की ख्याति और उन पर विश्वास का भाव रायबेली में पहुंच चुका था।

गांव ने नतीजे की चिन्ता किये बगैर रोज सुबह अपना फावड़ा-तगारी-लगन-निष्ठा सब कुछ 'छेड़ का ताल' की पाल पर लगा दी।

गांव ने नतीजे की चिन्ता किये बगैर रोज सुबह अपना फावड़ा-तगारी-लगन-निष्ठा सब कुछ 'छेड़ का ताल' की पाल पर लगा दी। गांव को साझे के इस काम में आनन्द आने लगा। दोपहर तक मेहनत और फिर

दोपहर में उसी पाल पर बैठकर मिल-बांटकर रोटी खाने का क्रम एक मेले जैसे बन गया था। धीरे-धीरे छेड़ के ताल ने भी अपने ऊपर बरसा एक-एक टपका.... बूंद संजोने का वादा किया। प्रेम, जोत, बाडियारण, कैमलाया, गुजरा, साखन का पोखरा, कन्हैया की पोखर और छेड़ की ताल.....ये सभी मिलाकर साढ़े 99 बीघा जमीन सिंचित कृषि भूमि के रूप में आज रायवेली समृद्धि में अपना योगदान कर रहे हैं। अब ये अपने खेतों में रबी और खरीफ दोनों फसले लेते हैं, जो कभी इनके लिए सपना थी। खरीब की फसल को ये 'सियारी' और रबी की फसल को 'उंधारी' कहते हैं।

बंधे बने सात बरस हो गये। इन बंधों में आये पानी के बंटवारे को लेकर रायवेली के लोगों को न तो किसी ने कभी लड़ते देखा और न ही कभी ऊंची आवाज सुनी; जबकि करौली में बने सरकारी बांध-पंचना डैम को लेकर भरतपुर और करौली जिले के बीच में लगभग हर साल तकरार होती है।

समझ लेना चाहिए कि छोटे-छोटे बंधे क्यों अच्छे होते हैं और बड़े-बड़े बांध क्यों बेकार। छोटे बंधे प्रेम बढ़ाते हैं और समृद्धि भी..... बड़े-बड़े बांध तकरार भी लाते हैं और विनाश भी।

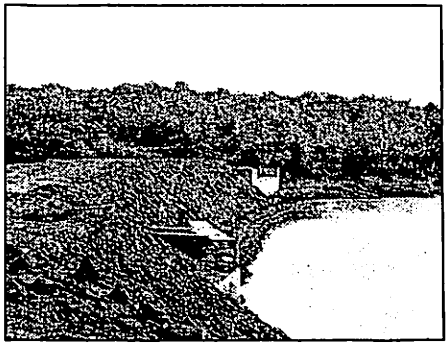

बंधा बने सात बरस हो गये। इन बंधों में आये पानी के बंटवारे को लेकर रायबेली के लोगों को न तो किसी ने कभी लड़ते देखा और न ही कभी ऊंची आवाज सुनी।

विरमका : भरी हथेलियों वाला गांव

विरमका सपोटरा तहसील का ही एक गांव है। खिजुरा गांव के पूरब में 3 कि.मी दूर जंगल के बीच बसा हुआ। 27 परिवारों की एक छोटी सी आबादी ! कहते हैं कि वीरी नामक एक बीरबानी ने इस गांव की स्थापना की। मूलतः यह मीणा आबादी का ही गांव था। 19वीं शताब्दी के मध्य में घुन्नी सायपुर (बयाना) के कुछ गुर्जर परिवार भी यहां आ बसे। विरमका के बीच आज भी वह पुरानी हवेली है, जो कभी डांग में सामान के खरीद-फरोख्त का बड़ा मुकाम थी। हवेली को ये 'जाग' कहते हैं। 20-25 गांव के लोग इस जाग में आते थे। छः कि.मी. दूर का पैदल रास्ता तय कर कर्णपुर कस्बे से करीब 150 लोग रोजाना 15 से 20 लीटर प्रतिव्यक्ति छाछ की तलाश में यहां आते थे। विरमका उन्हें कभी खाली हाथ नहीं लौटाता था। आप समझ सकते हैं कि विरमका कभी कितना समृद्ध गांव था !

जो हथेली कभी भर-भर कर दूसरों को देती थी, वह हथेली अब मांगने के लिए दूसरों के सामने फैल गई। विरमका एक अजीब सी स्थिति में आकर खड़ा हो गया। किंकर्तव्यविमूढ़ !

80 के दशक में विरमका के आस-पास से जंगल क्या गया, विरमका की खुशहाली ही चली गई। ठेकेदार तो पेड़ों को काट-काट कोयला बनाने में लगे रहे, विरमका की तो जिन्दगी ही कोयला हो गई। जंगल गया.... पानी गया..... पशुधन गया..... रोजगार गया..... विरमका की तो जैसे हथेली ही उलट गई। जो हथेली कभी भर-भर कर दूसरों को देती थी, वह हथेली अब मांगने के लिए दूसरों के सामने फैल गई। विरमका एक अजीब सी स्थिति में आकर खड़ा हो गया। किंकर्तव्यविमूढ़ ! कुछ समझ में नहीं आता था कि क्या करें ? यहां भी प्रेरणा ने पुल बांधे।

एक बार विरमका की कुछ भैंसें जंगल से वापस नहीं लौटीं। अंगद और विरमका के दूसरे गांववासी खिजुरा गांव के भोपा रामजीलाल के पास पहुंचे। गांव के पुजारी को 'भोपा' कहते हैं। वह रामजीलाल से यह जानने आये थे कि उनकी भैंसें कहां गईं। संयोग अच्छा था, खिजुरा के लोग अपनी थाई (चौपाल) पर बैठकर मोरेवाले ताल के काम पर चर्चा कर रहे थे। अंगद और दूसरे ग्रामवासियों ने उसे सुना। बात समझ में आई। जंगल में खोई भैंसें मिलीं या नहीं मिलीं.... पता नहीं, लेकिन विरमका

जंगल में खोई भैंसें मिलीं या नहीं मिलीं.... पता नहीं, लेकिन विरमका को एक आशा की छोटी किरण जरूर मिल गई।

को एक आशा की छोटी किरण जरूर मिल गई। खिजुरा के कल्याण गुर्जर, रामसिंह, दिनेश, गिरधारी और तरुण भारत संघ के कार्यकर्ताओं से अनुरोध किया कि वे विरमका में भी वैसी ही बैठक करें।

विरमका संकट में तो था ही, गांव शीघ्र तैयार हो गया। पहली बैठक तीन घंटे चली। अगली अमावस में फिर गांव बैठा। धीरे-धीरे समझ भी बन गई और रीछदा वाला ताल भी।... 27 काश्तकारों की 81 बीघा जमीन आज सिंचित है।

वर्ष 2005 में यह पोखर बनकर तैयार हो गया। बैरवा परिवार खुशी और श्रद्धा विनयावनत हो उठा। उसने इस पोखर का नाम इसकी नींव रखने वाले स्वर्गीय श्री सिद्धराज जी के नाम पर 'सिद्धसरोवर' रख दिया।

विख्यात गांधीवादी नेता स्वर्गीय श्री सिद्धराज ढड्ढा जी भी इस गांव में आने को उत्सुक हुए। उन्होंने विरमका के दक्षिण में एक पोखर की नींव रखी। उद्देश्य था कि जो बैरवा परिवार भूमि होते हुए भी भूमिहीन जैसे ही हैं.....जिनके पास सिंचाई के लिए कोई पानी नहीं और गांव भी जिनसे साझा नहीं करता; ऐसे बैरवा परिवारों की खुद अपनी एक व्यवस्था हो। इस संकल्प के साथ इस पोखर की नींव रखी गई। तरुण भारत संघ ने अहम भूमिका अदा की। मदद भी दी और प्रोत्साहन भी। वर्ष 2005 में यह पोखर बनकर तैयार हो गया।

बैरवा परिवार खुशी और श्रद्धा विनयावनत हो उठा। उसने इस पोखर का नाम इसकी नींव रखने वाले स्वर्गीय श्री सिद्धराज जी के नाम पर 'सिद्धसरोवर' रख दिया। बैरवा की 20 बीघा भूमि पर आज खेती का कोई संकट नहीं। विरमका गांव ने घेरकी और पीलीपोखर तो बनाई ही, खूसन का पोखर भी बनाया।

आज विरमका दावा कर सकता है कि अब इनकी हथेलियां खाली नहीं। आज नहीं, तो कल विरमका फिर दाता बनेगा..... इसका गौरव फिर लौटेगा।

आज विरमका दावा कर सकता है कि अब इनकी हथेलियां खाली नहीं। आज नहीं, तो कल विरमका फिर दाता बनेगा..... इसका गौरव फिर लौटेगा।

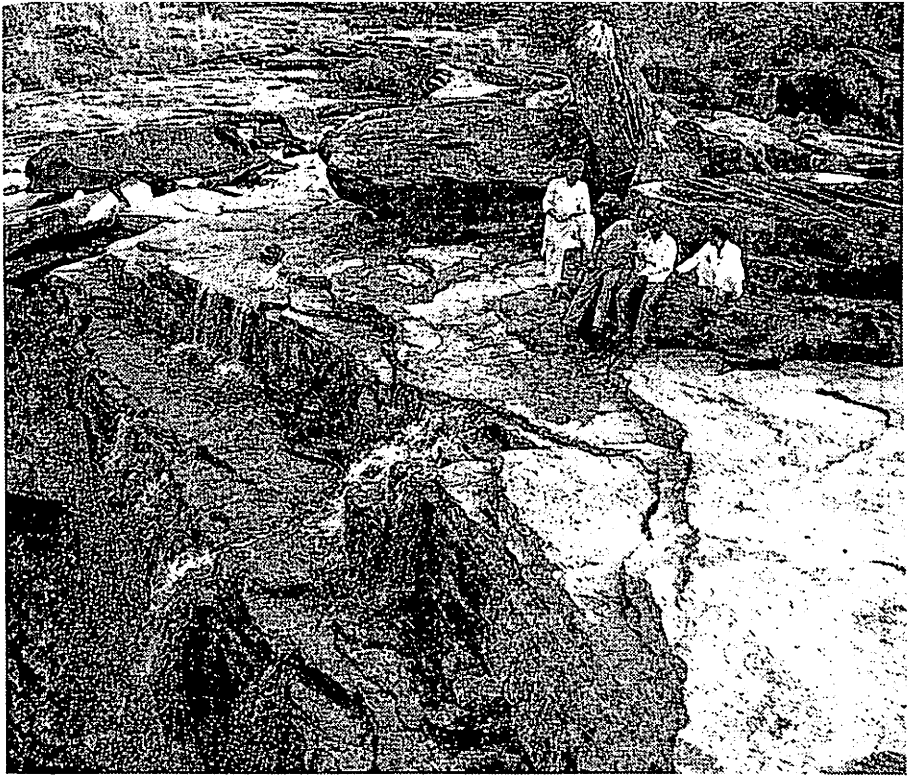

फिर बही नदी 'महेश्वरा'

किसी ने सच कहा है कि इन्सान अपने कर्मों से अपनी समृद्धि खोता है और यदि ये कर्म अच्छे हों तो एक दिन उसकी लूटी हुई समृद्धि फिर वापस आ जाती है । लेकिन ये इतना आसान नहीं होता..., खासकर धरती का चेहरा बदलना।

किसी को भी यह सुन कर गर्व होगा कि सपोटरा के बाशिंदों ने पिछले दस बरस में अपनी धरती का चेहरा बदलने की जी-तोड़ कोशिश की और चेहरा बदल भी दिया । नदी महेश्वरा कभी जिस समाज की लापरवाही और बाहरी दखल के कारण सूख गई थी, उसी समाज ने अपनी सजकता और श्रम से आज उस नदी को पुनर्जीवित कर दिखाया है । एक बार सुन कर यकीन नहीं होता .....कभी सपोटरा की डांग के बाशिंदों को भी यकीन नहीं था कि एक दिन उनकी छोटी-छोटी कोशिशें, छोटे-

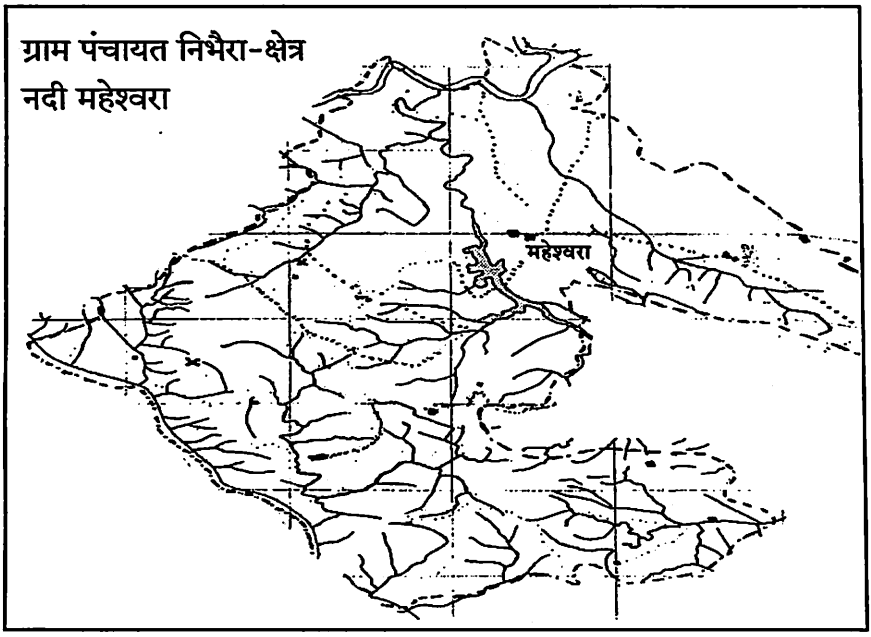

छोटे पगारे-बंधे-पोखर-पोखरा एक दिन एक मौसमी धारा को बारहमासी बना देंगी।

आप किसी सरकारी अधिकारी से पूछेंगे तो वह आपको महेश्वरा नदी के बारे में कुछ नहीं बता सकता। न राजस्थान का सिंचाई विभाग, न करौली का जिला कलक्टर और न सपोटरा के सिंचाई विभाग का कोई इंजीनियर। कारण कि सरकारी नक्शे में महेश्वरा नाम की कोई नदी इस इलाके में है ही नहीं। लेकिन सपोटरा डांग का हर बाशिंदा आपको महेश्वरा के पुनः लौटे यौवन का परिचय दे सकता है।

महेश्वरा 25 कि. मी. लम्बी एक धारा है। महेश्वरा नामक शिव के एक पवित्र स्थान को महेश्वरा का उद्गम स्थल माना गया। यहां प्राकृतिक रूप में बना एक पंच शिवलिंग है। इस शिवलिंग पर पानी की एक-एक बूंद जैसे शिव पर अर्पित हो रही है। हर नदी का उद्गम स्थल वहां के समाज के लिए एक तीर्थ ही होता है। अतः सपोटरा की डांग के लिए महेश्वरा एक तीर्थ ही है। इसी के नाम पर समाज ने इस नदी का नाम महेश्वरा रख दिया। महेश्वरा के निकट

खिजुरा और निभैरा.... रायबेली से आकर दो छोटी पतली धाराएं चिड़ियां नामक एक स्थान पर मिलती हैं। यहीं नदी अपना आकार लेना शुरू करती है। फिर महेश्वरा नदी गढ़ी गांव (कछियारा), विरम की गुवाड़ी, मन्दिर त्रिलोक सिंह, गडरेटिन, वैमूरखेत होती हुई तोहरा नामक जगह पर चम्बल में मिल जाती है। 25 कि. मी. के इस सफर में निभैरा खोद की एक धारा वैमूरखेत में आकर महेश्वरा नदी से मिलती है। इस प्रकार महेश्वरा पहला संगम है, वैमूरखेत दूसरा और तोहरा तीसरा। मोरवाली सोत और धनिया सोत भी इस नदी को अप्रत्यक्ष रूप से समृद्ध करते हैं। सोत वह जगह होती है, जिसके ऊपर पानी झरने रूप में दिखे और किसी एक जगह भरा भी रहे।

पिछले दस बरस में खिजुरा, रावेली, निभैरा, विरमका समेत 30-35 गांवों ने अपने अपने साधन से मेंढ़बन्दियाँ कीं, ताल की पालें बांधी..। पोखर-पोखरा बनाये। इन्होंने ही महेश्वरा को सदानीरा बनाया।

पहले कभी जब नदी जिंदा थी, ऐसे ही स्रोत और जंगल नदी को समृद्ध करते थे। पिछले दस बरस में खिजुरा, रायबेली, निभैरा, विरमका समेत 30-35 गांवों ने अपने-अपने साधन से मेंढ़बन्दियाँ कीं, ताल की पालें बांधीं। पोखर-पोखरा बनाये। उन्होंने ही महेश्वरा को सदानीरा बनाया। नीचे धरती में चट्टान ही चट्टान है। पानी का रिसरिस कर जाना जरा मुश्किल काम है। बूँद-बूँद से घट भरने जैसा, लेकिन जब डांग की धरती का पेट भर गया, तो महेश्वरा नदी के चेहरे पर भी पानी की चमक दिखाई दे गई। ऊपर के इलाकों में महेश्वरा नदी एक झरने की तरह दिखाई देती है। धीरे-धीरे एक पतली जलधारा यहीं से इसे इसके अधिकतम फैले पाट के रूप में देखना हो, तो भकूला नामक स्थान पर जाना चाहिए। मोरेवाला नामक स्थान पर मोरेवाला बांध भी महेश्वरा नदी को इसके वर्तमान स्वरूप में लाने में सहायक सिद्ध हुआ। यदि हमारे मन में महेश्वरा नदी को पुनर्जीवित करने वाले श्रम साधकों को सचमुच..! धन्यवाद देने को मन हो तो हमें ये सभी स्थान देखने चाहिए।

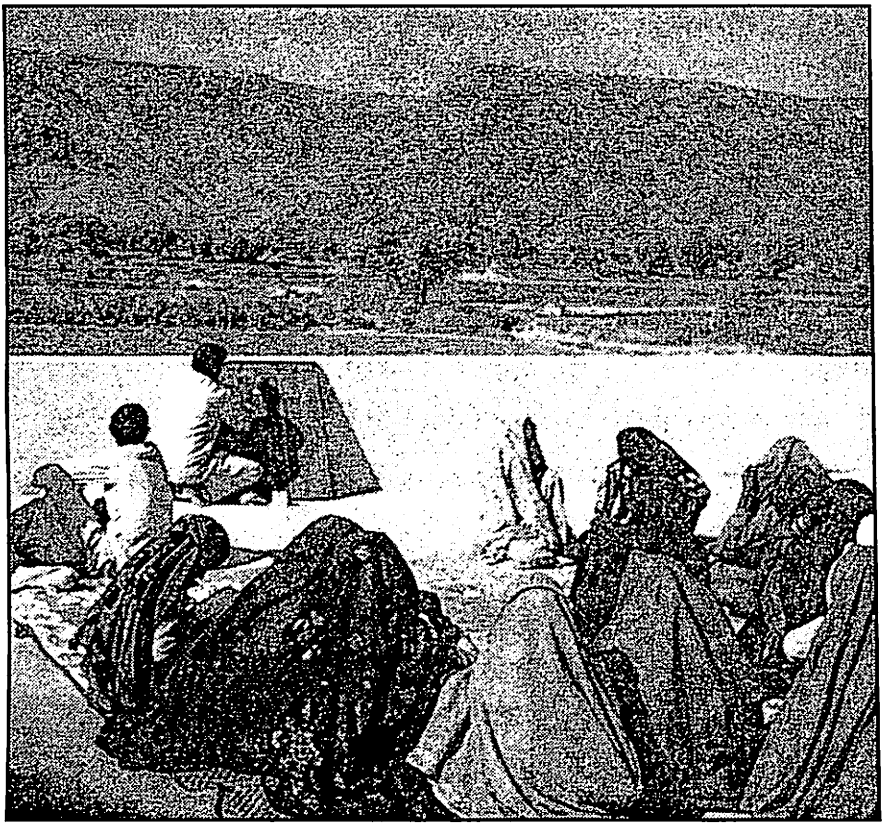

आगे आईं बीरबानियां

सपोटरा की डांग की जिन्दगी में वर्ष -2003 दूसरा टर्निंग प्वाइंट बना।

तरुण भारत संघ के भीकमपुरा आश्रम में एक महिला सम्मेलन हुआ। इस सम्मेलन में राजस्थान के लगभग हर जिले से महिला कार्यकर्ता आई थीं। ये अपने साथ ऐसी साथियों को भी लाई थीं, जिन्होंने कभी अपने गांव से बाहर की दुनिया को ठीक से देखा भी नहीं था। डांग से आई प्रेम, रज्जोदेवी, माया, लखनबाई, कसनी देवी, उगन्ती देवी, गुड्डी, रूपन्ती बैरवा और गुलबाई समेत कई महिलाएं ऐसी ही थीं। इन्हें तरुण भारत संघ के

कार्यकर्ता चमन सिंह बहुत कोशिश कर सम्मेलन में ले आये थे। ये आपस में तो खूब बोलती थीं, लेकिन हजार महिलाओं की भीड़ के सामने बोलने का नम्बर आया तो स्वर ने चुप्पी साध ली। आखों से जो झर-झर आंसू बहे, उन्होंने ही डांग की बीरबानियों का दर्द सबके सामने उड़ेल दिया। जब तक ये बीरबानियां डांग वापस नहीं लौटीं, इनके घरवालों का जी एक अज्ञात भय से ऊपर-नीचे होता रहा। आखिरकार डांग की कोई बेटी.... कोई बहू पहली बार इतनी दूर.....वो भी गैर मर्दों के साथ गई थी। जब ये वापस लौटीं, तब मोट्यारों की सांस में सांस आई।

सम्मेलन से कुछ हासिल करने के मामले में डांग की औरतें.....मर्दों से पीछे नहीं रहीं। इनका खोया आत्मविश्वास इनके साथ-साथ आया। इन्होंने सम्मेलन में बचत के गुर सीखे। महिला मण्डल क्या होता है ?.....यह जाना और समझा कि छोटी-छोटी बचत कैसे तरक्की के बड़े रास्ते खोलती है। ऐसे किस्से इन्होंने सम्मेलन में आई बहनों के अनुभव के रूप में सुने। गांव लौटीं, तो इन्होंने भी वैसी ही अलग बात की, जैसी कि नीमी सम्मेलन से लौटकर कल्याण गुर्जर और अंगद ने की थी। इस बार गांव को जरा कुछ कम अजीब लगा और फिर इन बीरबानियों ने भी एक सपने की गांठ बांध ली थी। अब तो इनके पास

ये आपस में तो खूब बोलती थीं, लेकिन हजार महिलाओं की भीड़ के सामने बोलने का नम्बर आया तो स्वर ने चुप्पी साध ली। आखों से जो झर-झर आंसू बहे, उन्होंने ही डांग की बीरबानियों का दर्द सबके सामने उड़ेल दिया।

साधन भी थे। तरुण भारत संघ द्वारा हटियाकी गांव में बनाई गई स्कूल की इमारत ! जगदीश गुर्जर, चमनसिंह और इन सबके समन्वयन से चल रही जीवन शालाएँ ! ! इन जीवनशालाओं में पढ़ाई के अलावा, खेती, किसानी, मवेशी..... जीवन चलाने के लिए साधन व कला के बारे में बखूबी बताया जाता है। पानी के काम में श्रमदान के दौरान महिलाओं की भूमिका गांव पहले ही देख चुका था। फिर इस बार तरुण भारत संघ भी एक नये जोश के साथ, महिलाओं के संग काम करने को तैयार था। जो अनपढ़ थी, उन्हें हिसाब-किताब जोड़ने लायक कामचलाऊ शिक्षा देने का काम शुरू हो चुका था। हटियाकी की ढाणी की प्रेम बैरवा को महिला मंडल का काम सुनने में तो बहुत अच्छा लगा, लेकिन उसे यकीन नहीं था कि वह इस काम को कर पायेगी। एक के पति खुद ये प्रस्ताव लाये थे, तो फिर उसके लिए मुश्किल कहां थी ! गुलबाई भी इस काम के लिए तैयार हो गईं। वे एक दिन प्रेमा के घर आईं। इन बीरबानियों की बात प्रेम की समझ में आ गई। प्रेम भी छोटी-छोटी बचत के लिए छोटे-छोटे महिला मण्डल बनाने वाली एक बड़ी कार्यकर्ता बन गई। शुरू-शुरू में हर तरह की झिझक थीः बोलने की भी, हिसाब-किताब की भी, दूसरे को समझा पाने की और कहीं बाहर आने-जाने की भी। अकेले आना-जाना तो बहुत ही मुश्किल लगता था, लेकिन धीरे-धीरे सब आसान हो गया। अपनी मेहनत और बचत से डांग के महिला

जब शुरू-शुरू में पानी के ढांचे बनाने की बात मर्दों के सामने रखी, तो ढाणियों की चौपाले ठहाकों से भर गईं। किसी ने गम्भीरता से नहीं लिया। चटक चुनरी और घाघरे के घेर से नेतृत्व की बात उन्हें बेमानी लगी।

समूहों ने जब शुरू-शुरू में पानी के ढांचे बनाने की बात मर्दों के सामने रखी, तो ढाणियों की चौपालें ठहाकों से भर गईं। किसी ने गम्भीरता से नहीं लिया। चटक चुनरी और घाघरे के घेर से नेतृत्व की बात उन्हें बेमानी लगी। मर्दों को औरतों की छोटी-छोटी बचत का तब तक अन्दाजा नहीं था। जब काम शुरू हो गया; बीरबानियों ने अपने खजाने खोले; मजदूरी बांटी, तब मर्दों की आखें खुल गईं और वे भी साथ हो गये।

दरअसल डांग तक पानी ले जाने का कष्ट तो औरत के ही सिर था। मवेशियों के चारे, पानी का इंतजाम भी इन्हें ही करना पड़ता है। अतः नजदीक से नजदीक पानी हासिल करने की ललक औरतों में मर्दों से ज्यादा होना स्वाभाविक है। महिला मण्डलों की ताकत जल्द ही सामने आई। पहली बार ग्राम पंचायत के चुनावों में इनकी भी सुनी गई। इनकी मांग पर ही डांग में हैण्डपम्प लगे। निभैरा के चुनाव में मतदान प्रतिशत 38 के आंकड़े पर पहुंचा। धीरे-धीरे चारे का साधन भी बन गया। खरीफ के मौसम में धान-बाजरा और रबी के मौसम में सरसों-गेहूं अब इनकी फसलें हैं। कुछ एक गांव पंवार, करेला, आलू जैसी सब्जी भी करने लगे हैं। कालसदेव और हीरामनजी इनके देवता हैं, जिन्हें खीर चढ़ाने की सामर्थ्य भी अब इनके पास है।

सावन की हरियाली तीज पर अब ये उत्सव मनाते हैं। लकड़ा किस्म के देसी और सस्ते चावल के साथ-साथ अब खिजुरा गांव के लोग नैनया की ढाणी से देसी बासमती का बीज भी खरीद लाये हैं।

जब काम शुरू हो गया; बीरबानियों ने अपने खजाने खोले; मजदूरी बांटी, तब मर्दों की आखें खुल गईं और वे भी साथ हो गये।

डांग की मांग

ताल-पोखर अभी भी गांव की प्राथमिकता पर हैं, लेकिन यदि आप इनसे इनकी जरूरत और मांग पूछें, तो महिला मण्डल और पानी की बैठकों से बड़े पैमाने पर आई जागृति ने अब इनकी मांग के प्रकार बदल दिये हैं। अब ये अपनी सेहत के लिए नर्स और डाक्टर की सुनिश्चित मौजदूगी वाला अस्पताल चाहते हैं। बीरबानियां और इनके मर्द प्रसव घर में नहीं, किसी अस्पताल में कराने की बात करते हैं। इसके लिए रास्ता भी चाहिए और वक्त-बे-वक्त जीप का साधन भी। जगदीश जी बताते हैं कि जीप की छोटी-मोटी व्यवस्था इनकी संस्था ने की है, लेकिन अस्पताल, नर्स और डाक्टर अभी भी व्यवहार में गायब हैं।

अब ये अपनी सेहत के लिए नर्स और डाक्टर की सुनिश्चित मौजदूगी वाला अस्पताल चाहते हैं। अब सिर्फ स्कूल नहीं चाहतेः ये चाहते हैं कि स्कूल का मास्टर भी डांग का ही हो। यदि बाहरी इलाके के व्यक्ति की यहां पर बतौर मास्टर नियुक्ति जरूरी हो, तो उस पर स्थानीय ग्राम पंचायत का सीधा नियंत्रण होना चाहिए।

गांव वाले अब सिर्फ स्कूल नहीं चाहतेः ये चाहते हैं कि स्कूल का मास्टर भी डांग का ही हो। यदि बाहरी इलाके के व्यक्ति की यहां पर बतौर मास्टर नियुक्ति जरूरी हो, तो उस पर स्थानीय ग्राम पंचायत का सीधा नियंत्रण होना चाहिए; ताकि वह नियमित स्कूल आये और बच्चे नियमित पढ़ सकें। गांव का अभी तक का अनुभव यही है कि पंचायत जब भी शिकायत करती है, मास्टर का तबादला हो जाता है। उसकी जगह आया नया मास्टर फिर साल में दो बार आता है और साल पूरा हो जाता है।

गांव को यह भी लगता है कि शायद गांव तक आने वाली सड़क पक्की हो जाये, तो स्कूल में मास्टर और स्वास्थ्य केन्द्र में डाक्टर नियमित आने लगे। इसलिए पक्की सड़क भी इनकी प्रमुख मांगों में से एक है।

छठी और प्रमुख मांग यहां पर मवेशियों की नस्ल सुधार से जुड़ी है। भैंस की नस्ल सुधार के लिए अब ये सरकार से उम्मीद करते हैं कि वह इनके इलाके में अच्छी नस्ल के भैंसा की व्यवस्था करे। पहले जब समाज के बीच में अच्छा तालमेल था, तब हर गांव का अपना एक भैंसा व अच्छी नस्ल के बकरे होते थे। जब भैंस प्रसव लायक हो जाती, तो एक गांव का भैंसा दूसरे गांव चला जाता था। भैंस अगली बार नये भैंसा के संयोग से बच्चा पैदा करती थी। इस प्रकार भैंसे की अदला-बदली से नये मवेशियों की किस्म उन्नत होती थी और मवेशी कुछ परम्परागत बीमारियों से बचे रहते थे।

डांग के लोग बताते हैं कि एक ही बकरे के संयोग से कई बार बच्चा पैदा करने वाली बकरियों को 'सुकड़ा' नामक बीमारी हो जाती है। जब से गांव में तालमेल टूटा, सामुदायिक स्तर पर भैंसा व बकरे की उपस्थिति खत्म हुई। लोग निजी जरूरत के लिए निजी स्तर पर भैंसा रखने लगे; तब से मवेशियों की नस्ल सुधार का काम रुक गया। गांव इसका समाधान चाहता है।

हालांकि यह कोई अलग से मांग नहीं है, लेकिन गांव राष्ट्रीय ग्रामीण रोजगार गारंटी योजना में काम के स्तर पर ही नहीं, निगरानी के स्तर पर भी अपनी भागीदारी चाहता है। संस्था के कार्यकर्ताओं ने इस दिशा में कुछ पहल भी की है और नेता व अधिकारियों का विरोध भी झेला है। उम्मीद है कि अब मांग उठी है, तो कदम भी आगे बढ़ेंगे ही और एक दिन डांग का हर सपना भी पूरा होगा। एक दिन इनका अपना सूरज होगा, अपना आसमान.....अपनी डगर.....जिस पर चलकर दूसरे भी कह सकेंगे कि हां ! अब कठिन नहीं डगर डांग की।

सपोटरा की डांग में तरुण भारत संघ और ग्राम सभाओं की साझे से निर्मित जल संरचनाएं

क्रमसं	जोहड़ का नाम	गांव का नाम	संस्था	श्रमदान	कुल
1.	कमल सुरेश का जोहड़	चौंडक्या	4,375.00	8,750.00	13,125.00
2.	कल्याण का जोहड़	हटियाकी	3,250.00	7,500.00	11,250.00
3.	गांव वाला तालाब	रत्नो का पुरा	8,847.00	8,848.00	17,695.00
4.	शिव चरण का जोहड़	हटियाकी	3,617.00	3,67.00	7,341.00
5.	कमल जी की मेढ	हटियाकी	6,592.00	5,991.00	12,583.00
6.	रमेश गुर्जर का फू टा घर का तालाब	नहनियाकी	1,600.00	3,200.00	4,800.00
7.	पूरण सिंह गुर्जर की तलाई	रावतपुरा	6,920.00	9,921.00	13,841.00
8.	राधेश्याम की तलाई	चौडक्या	1,120.00	1,120.00	2,240.00
9.	कल्याण रामचरण का नाला का तालाब	हटियाकी	10,176.00	10,176.00	20,352.00
10.	जगन्नाथ ड्राइवर का ताल	रावतपुरा	3,048.00	3,048.00	6,096.00
11.	जयसिंह का ताल	रावतपुरा	5,773.00	5,774.00	11,547.00
12.	चौरीघेर राधापुरी का जोहड़	कुरका	5,776.00	7,577.00	13,353.00
13.	छोटी घेर की ताल	कुरका	6,243.00	6,244.00	12,487.00
14.	प्रसादी हरिसिंह का ताल	रावतपुरा	3,748.00	3,748.00	7,496.00
15.	गुर्जरन की ताल	चौडक्या	4,938.00	4,938.00	9,876.00
16.	रामप्रसाद ब्रजू की मेंढ़बंधी	नहनियाकी	1,960.00	1,680.00	3,640.00
17.	फूटा तालाब	चौडक्या	3,129.00	3,128.00	6,257.00
18.	मांगेलाल का ताल	रावतपुरा	13,448.00	13,448.00	26,599.00
19.	रामचरण का ताल	रावतपुरा	3,078.00	3,078.00	6,156.00
20.	रामसिंह का ताल	रावतपुरा	1,568.00	1,568.00	3,137.00

क्रसं	जोहड़ का नाम	गांव का नाम	संस्था	श्रमदान	कुल
21.	रसीलपुर का ताल	रसीलपुर	4,766.00	4,766.00	4,533.00
22.	रत्नो का पुरा वाला ताल	रत्नो का पुरा	3,127.00	3,128.00	6,255.00
23.	पातीपुरा वाला जोहड़	रत्नो का पुरा	2,229.00	2,230.00	4,459.00
24.	फूटीताल	चौडी का खाता	4,745.00	4,745.00	9,490.00
25.	रूपसिंह का ताल	रावतपुरा	1,530.00	1,530.00	3,060.00
26.	जमुनी का ताल	चौंडक्या	21,891.00	17,5116.00	39,407.00
27.	भरत वाली तलाई	कुरका	1,683.00	1,683.00	3,366.00
28.	राहेल का जोहड़	रावतपुरा	1,656.00	1,656.00	3,312.00
29.	मोती बैरवा की ताल	रावतपुरा	9,999.00	10,566.00	20,565.00
30.	बाखौशी बैरवा का जोहड़	चौडी का खाता	3,221.00	3,222.00	6,443.00
31.	गोपाल का जोहड़	ऊंची गुवाडी	9,750.00	10,566.00	20,565.00
32.	गांव की ताली	कुरका	5,140.00	5,140.00	10,280.00
33.	दोजिया माली की जोहड़	भरपूरा	3,334.00	3,335.00	6,669.00
34.	फूलचंद माली पोखर	भरपूरा	10,253.00	10,253.00	20,506.00
35.	हरियामाली का जोहड़	भरपूरा	5,980.00	6,987.00	11,967.00
36.	प्रभुलाल माली का जोहड़	भरपूरा	7,167.00	7,183.00	14,350.00
37.	धनकी माली की जोहड़	भरपूरा	12,560.00	12,569.00	25,129.00
38.	भोरेलाल का जोहड़	भरपूरा	2,944.00	2,964.00	5,908.00
39.	राधेश्याम का जोहड़	भरपूरा	2,232.00	2,232.00	4,464.00
40.	देवी सहाय का जोहड़	भरपूरा	4,717.00	4,718.00	9,435.00
41.	प्रीतम सिंह/फूलासिंह का जोहड़	भरपूरा	5,900.00	5,919.00	11,819.00
42.	भगवती लाल माली का जोहड़	भरपूरा	7,870.00	4,884.00	12,754.00
43.	सीताराम माली का जोहड़	भरपूरा	4,200.00	4,253.00	8,435.00
44.	नारायण का जोहड़	भरपूरा	3,380.00	3,399.00	6,779.00
45.	हरि की मेंढ़बंदी	खजूरा	550.00	550.00	1,100.00
46.	गणपत की मेढ़बंदी	खजूरा	5,095.00	5,097.00	10,192.00
47.	गिरधारी की मेढ़बंदी	खजूरा	6,595.00	2,598.00	9,193.00
48.	रमेश के घेर का तालाब	खजूरा	1,014.00	1,015.00	2,029.00
49.	कमल सिंह गुर्जर का तालाव	खजूरा	1,650.00	1,650.00	3,300.00
50.	रामजी लाल भोपा का जोहड़	खजूरा	4,553.00	4,558.00	9,111.00
51.	हरिसिंह का जोहड़	खजूरा	1,850.00	1,905.00	3,755.00
52.	कल्याण गुर्जर का पोखर	खजूरा	3,380.00	3,383.00	6,763.00
53.	रामविलास की ताल	खजूरा	11,090.00	7,091.00	18,181.00
54.	परसादी लाल की तलाई	खजूरा	6,986.00	2,987.00	9,973.00
55.	गिरधारी पोखर	खजूरा	9,180.00	5,861.00	15,041.00
56.	रामकरण का जोहड़	खजूरा	5,950.00	5,950.00	11,900.00
57.	हरेत का जोहड	खजूरा	4,948.00	3,288.00	8,236.00
58.	करण सिंह का जोहड	खजूरा	819.00	819.00	1,638.00
59.	सोनाराम की मेंढ़बंदी	नहानियाकी	2,090.00	2,100.00	4,190.00
60.	बाबूलाल का जोहड़	नहानियाकी	9,687.00	9,706.00	19,393.00
61.	बत्तीलाल बैरवा का जोहड़	नहानियाकी	10,517.00	10,517.00	21,034.00

क्रसं	जोहड़ का नाम	गांव का नाम	संस्था	श्रमदान	कुल
62.	जयकिशन बैरवा का जोहड़	नहानियाकी	8,287.00	8,277.50	16,553.50
63.	रामसिंह गुर्जर का जोहड़	नहानियाकी	1,972.00	1,973.00	3,945.00
64.	रामकुमार का बांध	नहानियाकी	3,275.00	3,287.00	6,562.00
65.	रामचरण की मेंढ़बंदी	नहानियाकी	2,170.00	2,175.00	4,345.00
66.	रामकरण की मेंढ़बंदी	नहानियाकी	1,740.00	1,754.00	3,494.00
67.	ब्रजमोहन का जोहड़	नहानियाकी	2,726.00	2,727.00	5,453.00
68.	सुरजारामा की तलाई	नहानियाकी	990.00	990.00	1,980.00
69.	हरिमोहन की तलाई	नहानियाकी	1,575.00	1,575.00	3,150.00
70.	कैमली वाली तलाई	नहानियाकी	17,100.00	5,700.00	22,800.00
71.	सार्वजनिक तलाई	नहानियाकी	28,641.00	9,082.00	37,723.00
72.	मूलचन्द गुर्जर का पोखरा	दरकी	1,785.00	1,785.00	3,570.00
73.	रामनारायण का जोहड़	दरकी	1,246.00	1,246.75	2,492.75
74.	गोकुल मीणा का जोहड़	दरकी	3,480.00	3,481.00	6,961.00
75.	भरतलाल मीणा का जोहड़	दरकी	4,327.00	4,320.00	8,647.00
76.	रामगिलास मीणा का जोहड़	दरकी	3,643.00	3,644.00	7,287.00
77.	चिरंजीलाल गुर्जर का जोहड़	दरकी	12,889.00	12,890.00	25,779.00
78.	बाबूलाल कमलेश की मेंढ़बंदी	दरकी	7,038.00	7,039.00	14,077.00
79.	रामजीलाल गुर्जर की मेंढ़बंदी	दरकी	6,000.00	6,001.00	12,001.00
80.	बच्चूसिंह की मेंढ़बंदी	दरकी	7,828.00	7,829.00	15,657.00
81.	हरजी गुर्जर का जोहड़	दरकी	5,407.00	5,407.00	10,814.00
82.	प्रहलाद का जोहड़	दरकी	790.00	791.00	1,581.00
83.	कमल गुर्जर का पोखरा	दरकी	5,439.00	5,439.00	10,878.00
84.	भूलाराम गुर्जर का पोखरा	मोरोची	5,243.00	5,244.00	10,487.00
85.	रामस्वरूप गुर्जर का जोहड़	मोरोची	4,513.00	4,513.00	9,026.00
86.	भरत लाल गुर्जर जोहड़	मोरोची	7,488.00	7,489.00	14,977.00
87.	रणजीत गुर्जर का जोहड़	मोरोची	1,959.00	1,960.00	3,919.00
88.	मोहन सिंह का जोहड़	मोरोची	7,341.00	7,358.00	14,699.00
89.	बन्सीलाल गुर्जर का जोहड़	मोरोची	2,774.00	2,770.00	5,544.00
90.	हेमराज का पोखर	रावतपुरा	4,140.00	2,070.00	6,210.00
91.	छारीवाला तालाब	रावतपुरा	8,220.00	4,110.00	12,330.00
92.	सार्वजनिक जोहड़	रावतपुरा	29,460.00	18,068.50	47,524.50
93.	श्रवण गुर्जर की डांडी तलाई	रावतपुरा	1,175.00	1,175.00	2,350.00
94.	बावडी वाला पोखर	रावतपुरा	22,095.00	11,047.50	33,142.50
95.	चिरंजी का पोखर	रावतपुरा	2,700.00	2,700.00	5,400.00
96.	हजारी की डोवली का पोखर	रावतपुरा	3,150.00	1,575.00	2,327.00
97.	हरी गुर्जर की तलाई	हटियाकी	5,072.00	5,072.00	10,122.00
98.	बाबा जी के खेत की तलाई	हटियाकी	990.00	990.00	1,980.00
99.	रामजी लाल की मेंढ़बंदी	हटियाकी	660.00	667.00	1,327.00
100.	रमेश गुर्जर की मेंढ़बंदी	हटियाकी	737.00	737.00	1,474.00
101.	कल्याण गुर्जर की मेंढ़बंदी	हटियाकी	770.00	770.00	1,540.00
102.	हरीगुर्जर व कमलेश का जोहड़	हटियाकी	9,525.00	9,525.00	19,050.00

क्रसं	जोहड का नाम	गांव का नाम	संस्था	श्रमदान	कुल
103.	बैरवा का पोखर	हटियाकी	23,024.50	7,425.50	30,450.00
104.	घनश्याम पूर्णिया की तलाई	हटियाकी	4,700.00	9,520.00	14,280.00
105.	धर्मसिंह का जोहड़	विरमका	3,190.00	3,191.95	6,381.95
106.	दीनदयाल का जोहड़	विरमका	8,240.00	4,249.25	12,489.25
107.	गोपाल मीणा का जोहड़	मरमदा खाता	8,972.00	9,066.00	18,038.00
108.	हजारी गुर्जर का जोहड़	मरमदा	2,823.00	2,812.00	5,635.00
109.	हजारी गुर्जर की मेंढ़बंदी	बन्धन का पुरा	4,670.00	4,686.00	9,356.00
110.	चिरंजी मीणा का जोहड़	बन्धन का पुरा	6,200.00	6,247.00	12,447.00
111.	हजारी गुर्जर का जोहड़	विरमका	4,650.00	4,689.00	9,339.00
112.	परसराम गुर्जर की मेंढ़बंदी	दयारामपुरा	2,550.00	2,565.00	5,115.00
113.	रोशन महेश का जोहड़	दयारामपुरा	6,150.00	6,188.00	12,338.00
114.	गुल्लाराम का जोहड़	दयारामपुरा	6,700.00	6,723.00	13,723.00
115.	कल्याण का जोहड़	दयारामपुरा	15,880.00	15,892.00	31,772.00
116.	हरिचरण का जोहड़	दयारामपुरा	4,740.00	4,964.00	9,704.00
117.	रामोतार गुर्जर की पोखर	दयारामपुरा	3,867.00	3,867.00	7,734.00
118.	रामस्वरूप गुर्जर की जोहड़	चौडक्या	4,697.00	4,907.00	9,604.00
119.	कमल सिंह की तलाई	चौडक्या	1,687.00	1,688.00	3,375.00
120.	सार्वजनिक तलाई	चौडक्या	26,055.00	9,818.00	35,873.00
121.	वडी का पुराना तालाब	चौडक्या	23,655.00	11,827.00	35,482.00
122.	छोट्या गुर्जर की मेंढ़बंदी	भटटी निमहैरा	3,725.00	3,727.00	7,452.00
123.	प.भरतलाल की मेंढ़बंदी	निमहैरा	4,700.00	4,720.00	9,420.00
124.	पीतम सिंह की मेंढ़बंदी	निमहैरा	5,800.00	5,812.00	11,612.00
125.	बाबूलाल बैरवा की मेंढ़बंदी	निमहैरा	8,500.00	8,518.00	17,018.00
126.	कल्याण की मेंढ़बंदी	निमहैरा	2,000.00	2,027.00	4,027.00
127.	हरिचरण गुर्जर की मेंढ़बंदी	निमहैरा	1,900.00	1,907.00	3,807.00
128.	भरत लाल गुर्जर की मेंढ़बंदी	निमहैरा	1,990.00	2,009.50	3,999.50
129.	प्रेम लक्षी केदार का जोहड़	रायवेली	2,407.00	2,407.00	4,814.00
130.	प्रेम लक्षी का जोहड़	रायवेली	4,152.00	4,152.00	8,304.00
131.	सार्वजनिक पीपली वाली तलाई	रसीलपुर	37770.00	18885.00	56655.00
132.	पीपली वाली तलाई	रसीलपुर	12420.00	6210.00	18630.00
133.	दिनेश सियाराम का जोहड़	राहड	5290.00	5300.60	10590.60
134.	सार्वजनिक तलाई	रतनोकापुरा	7320.00	3660.00	10980.00
135.	धर्मसिंह का तालाब	रतनोकापुरा	3307.00	3008.00	6315.00
136.	धर्मसिंह गुर्जर का जोहड़	रायवेली	4500.00	4522.00	9022.00
137.	जगदीश गुर्जर की मेड़बंदी	रायवेली	1660.00	1666.00	3326.00
138.	जगदीश गुर्जर का जोहड़	रायवेली	38000.00	3828.00	7628.00
139.	प्रीतम सिंह गुर्जर का जोहड़	रायवेली	3650.00	3657.00	7307.00
140.	प्रेमचन्द्र का पोखर	रायवेली	7383.00	4233.00	11620.00
141.	प्रेम की तलाई	रायवेली	3,320.00	2,360.00	5,680.00
142	सार्वजनिक तलाई	जोगपुरा	8,400.00	4,400.00	12,800.00
143	भागवती का एनीकट	जोगपुरा	5,740.00	5,740.00	11,480.00

क्रसं	जोहड़ का नाम	गांव का नाम	संस्था	श्रमदान	कुल
144	जगरूप का जोहड़	रायवेली	3,800.00	3,824.00	7,824.00
145	जगदीशं गुर्जर का जोहड़	रायवेली	1,660.00	1,666.00	3,326.00
146	सेठी मोटी बैरवा का जोहड़	रावतपुरा	6,310.00	2,800.00	9,110.00
147	मांगीलाल गुर्जर की तलाई	रावतपुरा	2,925.00	2,925.00	5,850.00
148	हरिसिंह का पोखर	रावतपुरा	2,480.00	2,480.00	4,960.00
149	रूपसिंह-राजसिंह का पोखर	रावतपुरा	2,728.00	2,728.00	5,456.00
150	जगन्नाथ की मेंढ़बन्दी	रावतपुरा	936.00	936.00	1,872.00
151	पुरण सिंह का पोखर	रावतपुरा	1,390.00	1,390.00	2,780.00
152	गुर्जरों की तलाई	चौड़यका	1,755.00	1,755.00	3,510.00
153	कौशल्या राधेश्याम की तलाई	चौड़यका	4,220.00	4,120.00	8,340.00
154	सार्वजनिक तलाई	चौड़यका	5,550.00	3,675.00	9,225.00
155	हरी बैरवा का पोखर	चौड़यका	3,225.00	3,225.00	6,450.00
156	बैरवा का सार्वजनिक पोखर	चौड़यका	4,900.00	1,675.00	6,575.00
157	सुरेश पाल सिंह का पोखर	चौड़यका	15,716.00	14,325.00	30,041.00
158	कल्याण-रामचरण का जोहड़	हटियाकी	3,690.00	3,690.00	7,380.00
159	हरि बैरवा की तलाई	हटियाकी	3,125.00	3,125.00	6,250.00
160	हरि बाबा बैरवा की तलाई	हटियाकी	1,355.00	1,355.00	2,710.00
161	धर्म सिंह का ताल	रतनो का पुरा	10,785.00	4,000.00	14,785.00
162	गांव वाला तालाब सार्वजनिक	रतनों का पुरा	25,480.00	27,720.00	53,200.00
163	मोहर सिंह का बांध	रतनों का पुरा	1,650.00	1,650.00	3,300.00
164	पिपल वाली तलाई	विशनातपुरा	6,120.00	6,120.00	12,240.00
165	हरि बैरवा व बिहारी गुर्जर की तलाई	विशनात पुरा	3,510.00	3,510.00	7,020.00
166	देवी सहाय बैरवा की तलाई	विशनात पुरा	1,250.00	1,250.00	2,500.00
167	मीठा लाल का पोखर	निभैरा	4,050.00	4,050.00	8,100.00
168	बाबूलाल का तालाब	निभैरा	3,080.00	3,080.00	6,160.00
169	खातेन का पुरा वाला ब्रजमोहन का पोखर	नहनियाकी	6,120.00	6,120.00	12,240.00
170	रमेश का जोहड़	नहनियाकी	2,100.00	2,100.00	4,200.00
171	रामसिंह का पोखर	रसीलपुर	4,834.00	2,000.00	6,834.00
172	चिरंजीव जगदीश बैरवा की तलाई	पाहड़ पुरा	4,510.00	4,510.00	9,020.00
173	प्रभुलाल गुर्जर की तलाई	कुरक्या	11,781.00	11,781.00	23,562.00
174	रामसिंह गुर्जर का बांध	कुरक्या	3,100.00	3,100.00	6,200.00
175	ब्रजवासी की मेंढ़बन्दी	मोरोची	1,800.00	1,800.00	3,600.00
176	सार्वजनिक तलाई	मोरोची	41,955.00	20,977.00	62,931.00
177	बगीची की तलाई	मोरोची	7,560.00	3,980.00	11,540.00
178	बड़ा तालाब	ऊँची गुवाड़ी	9,080.00	3,280.00	11,540.00
179	ऊँची गुवाड़ी का पोखर	ऊँची गुवाड़ी	11,160.00	-	11,160.00
180	सार्वजानिक जोहड़	ऊँची गुवाड़ी	56,800.00	18,930.00	75,730.00
181	पटोकी वाली जोहड़	ऊँची गुवाड़ी	20,960.00	8,280.00	29,240.00
182	गांव की तलाई	जोगपुरा	10,800.00	5,400.00	16,200.00
183	सार्वजनिक तालाब	जोगपुरा	26,235.00	18,250.00	44,485.00
184	नई पोखर	जोगपुरा	8,062.00	2,687.00	10,749.00

क्रसं	जोहड़ का नाम	गांव का नाम	संस्था	श्रमदान	कुल
185	बैरवा की तलाई	जोगपुरा	9,787.00	3,263.00	13,050.00
186	श्री लाल गुर्जर की तलाई	सपोटरा	17,370.00	12,244.00	29,612.00
187	श्रवण बैरवा का पोखर	भरपुरा	1,485.00	1,486.00	2,971.00
188	रामकिशौर बैरवा का पोखर	भरपुरा	3,603.00	3,603.00	7,206.00
189	केदार माली की मेंढ़बन्दी	भरपुरा	3,100.00	3,110.00	6,210.00
190	राम जी बैरवा की तलाई	चौंड़क्या	3,400.00	-	3,400.00
191	रामफूल गुर्जर का पोखर	चौंड़क्या	1,141.00	1,142.00	2,283.00
192	हरी गुर्जर का पोखर	चौंड़क्या	3,500.00	3,500.00	7,000.00
193	गिर्राज का पोखर	चौंड़क्या	4,162.00	4,163.00	8,325.00
194	सीताराम बैरवा की मेंढ़बन्दी	निभैरा	925.00	926.00	1,851.00
195	रामचरण बैरवा का पोखर	निभैरा	1,321.00	1,322.00	2,643.00
196	गणपत की तलाई	खजुरा	2,490.00	-	2,490.00
197	केदार की मेंढ़बन्दी	खजुरा	1,660.00	-	1,660.00
198	केदार की तलाई	खजुरा	6,653.00	6,653.00	13,306.00
199	बड़ा तालाब	रावतपुरा	9,720.00	4,860.00	14,580.00
200	हरी गुर्जर का जोहड़	रावतपुरा	4,443.75	4,443.75	8,887.50
201	हरी बैरवा की तलाई	रावतपुरा	3,825.00	3,825.00	7,650.00
202	नया पोखर	रावतपुरा	10,260.00	10,260.00	20,520.00
203	चाली वाला तालाब	रावतपुरा	16,680.00	8,340.00	25,020.00
204	अर्जुन का पोखर	रावतपुरा	7,050.00	7,050.00	14,520.00
205	हरवली खान का पोखर	गुरजा	10,120.00	10,119.00	20,239.00
206	भरतलाल का नयाहार पोखर	कुरका खो	2,285.00	2,285.50	4,570.50
207	प्रभु गुर्जर का नया मेड़की मेंढ़बन्दी	कुरका खो	5,085.00	5,085.00	10,170.00
208	प्रभु गुर्जर का पोखर	कुरका खो	2,357.00	2,357.00	4,714.00
209	छत्री वाली तलाई	कुरका खो	13,950.00	13,950.00	27,900.00
210	राम अवतार शर्मा का जोहड़ (पोखर)	कुरका खो	2,167.00	2,168.00	4,335.00
211	बिशन लाल बैरवा का पोखर	दयाराम पुरा	8,346.00	8,347.00	16,693.00
212	प्रकाश बैरवा का जोहड़(पोखर)	दयारा पुरा	3,802.00	3,802.00	7,604.00
213	गोविन्द शर्मा का जोहड़ (पोखर)	दयाराम पुरा	3,166.00	3,166.00	6,332.00
214	छोटे लाल बैरवा का पोखर	दयाराम पुरा	3,131.00	3,031.00	6,162.00
215	मोरान वाला पोखर	नहनियाकी	13,100.00	6,550.00	19,650.00
216	मेहता वाला ताल	नहनियाकी	30,495.00	14,546.00	45,041.00
217	केमन वाली जोहड़ (पोखर)	नहनियाकी	45,480.00	15,546.00	45,041.00
218	माशूक पटेल की मेंढ़बन्दी	विरमका	7,212.00	7,112.00	14,424.00
219	वीरमका की तलाई	विरमका	5,710.00	-	5,710.00
220	केदार गुर्जर की मेंढ़बन्दी	विरमका	6,396.00	6,396.00	12,792.00
221	बैरवा का पोखर	हटियाकी	42,075.00	14,025.00	56,100.00
222	हजारी का पोखर	बन्धन का पुरा	5,265.00	5,265.00	10,530.00
223	हरी प्रसाद का पोखर	मरमदा	2,700.00	2,700.00	5,400.00
224	हजारी गुर्जर का पोखर	मरमदा	2,635.00	-	2,635.00
225	फूटी पोखर , रामजी लाल बैरवा	चोड़ी खता	2,953.00	2,954.00	5,907.00

क्रसं	जोहड़ का नाम	गांव का नाम	संस्था	श्रमदान	कुल
226	सार्वजनिक तलाई	हरीकी	5,190.00	-	5,190.00
227	भावदिया वाली पोखर	रावत पुरा	14,115.00	7,057.00	21,172.00

1 अप्रैल 2001 से 2002 तक

क्रसं	जोहड़ का नाम	गांव का नाम	संस्था	श्रमदान	कुल
1.	सार्वजनिक जोहड़ (पोखर)	गुर्जा	3,875.00	1,945.00	5,820.00
2	बत्ती लाल की मेंढ़बन्दी	राहिर	3,308.00	3,309.00	6,617.00
3	करोड़ी लाल की मेंढ़बन्दी	राहिर	3,067.00	3,068.00	6,617.00
4	रामकेश की मेंढ़बन्दी	राहिर	1,835.00	1,835.00	3,670.00
5	गणपत मीणा की मेंढ़बन्दी	राहिर	6,304.00	6,305.00	12,609.00
6	रामकेश-राधेश्याम की मेंढ़बन्दी	निमैरा	3,929.00	3,929.00	7,858.00
7	कल्याण सिंह की मेंढ़बन्दी	निमैरा	677.00	677.00	1,354.00
8	भरत लाल की मेंढ़बन्दी	निमैरा	8,411.00	8,412.00	16,823.00
9	शम्भु गुर्जर की मेंढ़बन्दी	निमैरा	2,073.00	2,074.00	4,147.00
10	पतिराम लटूर शर्मा का पोखर	निमैरा	10,818.00	10,819.00	21,637.00
11	राधेश्याम-सियाराम का जोहड़	निमैरा	2,900.00	2,917.00	5,817.00
12	सीताराम-रामकिशन का जोहड़ (पोखर)	निमैरा	1,693.00	1,693.00	3,386.00
13	जगदीश शर्मा का जोहड़ (पोखर)	निमैरा	9,286.00	9,286.00	18,572.00
14	रामजीलाल की मेंढ़बन्दी	निमैरा	1,296.00	1,296.00	2,592.00
15	प्रभुराम चरण की मेंढ़बन्दी	निमैरा	4,878.00	4,878.00	9,757.00
16	केदार की तलाई		1,963.00	1,964.00	3,927.00
17	कल्याण गर्जर की तलाई		4,200.00	4,200.00	8,400.00
18	गिरधारी की तलाई		906.00	906.00	1,812.00
19	शिव चरण की तलाई		2,869.00	2,869.00	5,738.00
20	गणपत की मेंढ़बन्दी		3,760.00	3,760.00	7,520.00
21	रामजी लाल प्रसादी की मेंढ़बन्दी		967.00	967.00	1,911.00
22	हेरत गुर्जर की मेंढ़बन्दी		1,385.00	1,385.00	2,911.00
23	हरेत की तलाई		4,414.00	4,414.00	8,828.00
24	करण सिंह की तलाई		12,075.00	14,758.00	26,833.00
25	रामकरण गुर्जर की मेंढ़बन्दी		1,455.00	1,456.00	2,911.00

2001 -2002 तक

क्रसं	जोहड़ का नाम	गांव का नाम	संस्था	श्रमदान	कुल
1.	वैरवा की तलाई	जोगपुरा	15,927.00	5,292.00	21,909.00
2	हनुमान की तलाई	जोगपुरा	30,850.00	14,700.00	45,550.00
3	डंगरी वाला पोखर	चोडक्या	11,925.00	10,325.00	22,250.00
4	सूवालाल गुर्जर का एनीकट	भोपारा	3,190.00	-	3,190.00
5	रामकरण का जोहड़	भोपारा	5,547.00	5,547.00	11,094.00
6	सार्वजनिक तलाई	रसिलपुर	30,270.00	14,760.00	45,030.00
7	रसिलपुर का ताल	रसिलपुर	4,075.00	-	4,075.00
8	सार्वजनिक तालाब	विरमका	17,268.00	9,112.00	26,380.00

क्रसं	जोहड का नाम	गांव का नाम	संख्या	श्रमदान	कुल
9	बिरमका का पोखर	बिरमका	3,465.00	-	3,465.00
10	रामजी लाल का जोहड़	नैनियाकी	5,879.00	5,899.00	11,758.00
11	खेड़ेनीचे तलाई	नैनियाकी	69,929.00	46,842.00	1,16,768.00
12	शीतवाली तलाई	नैनियाकी	31,588.00	10,587.00	42,175.00
13	हरिमोहन की मेंढ़बन्दी	नैनियाकी	2,875.00	2,875.00	5,749.00
14	सुमेर सिंह की मेंढ़बन्दी	नैनियाकी	2,111.00	2,111.00	4,222.00
15	धमेन्द्र सिंह की मेंढ़बन्दी	नैनियाकी	908.00	1,108.00	2,016.00
16	ब्रज की मेंढ़बन्दी	नैनियाकी	3,665.00	3,665.00	7,330.00
17	राधेश्याम गुर्जर की मेंढ़बन्दी	नैनियाकी	3,490.00	3,490.00	6,981.00
18	फतुआ का मेंढ़बन्दी	नैनियाकी	6,850.00	6,850.00	13,700.00
19	सार्वजनिक तलाई	नैनियाकी	7,640.00	3,890.00	6,981.00
20	भगवान सिंह की जोहड़ी	नैनियाकी	37,170.00	17,685.00	54,855.00
21	जयलाल गणपत का जोहड़	नैनियाकी	4,153.00	50,74.00	9,227.00
22	गौकुण्ड तलाई	नैनियाकी	1,02,989.00	51.494.00	1,54,483.00
23	ब्रजमोहन की तलाई	नैनियाकी	44,098.00	21,591.00	65,689.00
24	हौरीलाल का जोहड़	नैनियाकी	2,025.00	2,025.00	4,050.00
25	प्रभु पण्ड़त का जोहड़	दौलतपुरा	5,725.00	5,725.00	11,451.00
26	प्रलहाद सेठ का जोहड़	दौलतपुरा	6,303.00	6,303.00	12,607.00
27	रमेश का ताल	दौलतपुरा	5,743.00	5,743.00	11,486.00
28	हरि का तालाब	दौलतपुरा	22,429.00	11,214.00	33,643.00
29	हरि सेठ का तालाब	मरमदा	9,240.00	2,240.00	18,480.00
30	जगन्नाथ की मेंढ़बन्दी	मरमदा	6,065.00	6,066.00	12,131.00
31	राधेश्याम की मेंढ़बन्दी	मरमदा	5,730.00	5,730.00	11,461.00
32	सार्वजनिक तलाई	मरमदा	36,219.00	12,074.00	48,293.00
33	सार्वजनिक बांध	मरमदा	28,274.00	14,878.00	43,152.00
34	रामसहाय राजाराम का जोहड़	दरकी	14,850.00	14,859.00	29,709.00
35	रामखिलाड़ी रामस्वरुप की मेंढ़बन्दी	दरकी	8,300.00	8,305.00	16,605.00
36	मात्या आदि का जोहड़	दरकी	6,203.00	6,203.00	12,406.00
37	हेमराज की मेंढ़बन्दी	दरकी	16,470.00	16,470.00	32,940.00
38	कमल बैरवा की मेंढ़बन्दी	दरकी	7,906.00	7,907.00	15,813.00
39	इमरती लाल मीणा की मेंढ़बन्दी	दरकी	3,597.00	3,597.00	7,195.00
40	हरलो मीणा आड़ी का जोहड़	दरकी	6,748.00	6,749.00	13,499.00
41	सुमेर शर्मा की तलाई	भरपुरा, निम्हेड़ा	6,273.00	6,273.00	12,546.00
42	बाबूलाल माली की मेंढ़बन्दी	भरपुरा, निम्हेड़ा	7,161.00	7,161.00	14,322.00
43	कमलेश की मेंढ़बन्दी	भरपुरा, निम्हेड़ा	4,200.00	4,201.00	8,401.00
44	प्रभु की मेंढ़बन्दी	भरपुरा, निम्हेड़ा	2,708.00	2,709.00	5,417.00
45	दयाल माली की मेंढ़बन्दी	भरपुरा, निम्हेड़ा	2,099.00	2,099.00	4,197.00
46	बलवीर शर्मा की तलाई	भरपुरा, निम्हेड़ा	7,161.00	7,161.00	14,322.00
47	बीना हरि, रामलाल की मेंढ़बन्दी	भरपुरा	7,930.00	7,930.00	15,860.00
48	हुकुमचन्द मुकुट लाल कृष्णा की मेंढ़बन्दी	भरपुरा	25,250.00	25,252.00	50,502.00
49	नारायण का जोहड़	रसिलपुर	4,889.00	4,891.00	9,780.00

क्रसं	जोहड का नाम	गांव का नाम	संस्था	श्रमदान	कुल
50	ठण्ड़ी मीणा कैलाश का जोहड़	अमरगढ़	6,490.00	6,504.00	12,996.00
51	गांव की तलाई	ऊँचीगुवाड़ी	4,930.00	4,633.00	9,563.00
52	बड़ा नाला का एनीकट	ऊँचीगुवाड़ी	8,390.00	4,195.00	12,585.00
53	सार्वजनिक जोहड़ -1	रावतपुरा	3,440.00	1,720.00	5,160.00
54	सार्वजनिक जोहड़-2	रावतपुरा	8,390.00	4,195.00	12,585.00
55	नया पोखर	रावतपुरा	15,850.00	15,850.00	31,700.00
56	छाली वाला तालाब	रावतपुरा	7,500.00	6,750.00	14,250.00
57	बड़ा तालाब	रावतपुरा	6,380.00	6,380.00	12,760.00
58	हरिसिंह का पोखर	रावतपुरा	11,846.00	11,846.00	23,692.00
59	चमन और रामस्वरुप बैरवा का पोखर	रावतपुरा	2,357.00	2,357.00	4,714.00
60	ब्रजमोहन की मेंढ़बन्दी	रावतपुरा	2,340.00	2,340.00	4,680.00
61	रामसिंह का पोखर	रावतपुरा	2,632.00	2,632.00	5,265.00
62	प्रभु गुर्जर की मेंढ़बन्दी	रावतपुरा	1,894.00	1,895.00	3,789.00
63	श्रवण जगन्नाथ की मेंढ़बन्दी	रावतपुरा	1,636.00	1,637.00	3,273.00
64	धरमसिंह का एनीकट	रायवेली	3,100.00	-	3,100.00
65	कन्हैया लाल गुर्जर की तलाई	रायवेली	3,020.00	-	3,020.00
66	सार्वजनिक धरम तलाई	रायवेली	20,000.00	10,288.00	30,288.00
67	प्रसादी आदि का जोहड़	रायवेली	3,323.00	3,323.00	6,646.00
68	नवल, हरिसिंह ,मोहन का जोहड़	रायवेली	6,812.00	6,812.00	13,624.00
69	नरसी, जगदीश आदि का जोहड़	रायवेली	6,468.00	6,468.00	12,936.00
70	गुजरा, प्रीतम, अजारु का जोहड़	रायवेली	10,450.00	10,460.00	20,919.00
71	कदम खण्ड़ी गढ़	कल्याणपुरा	2,902.00	2,903.00	5,805.00
72	विजयराम की मेंढ़बन्दी	कल्याणपुरा	9,450.00	9,450.00	18,900.00
73	जगदीश शर्मा की मेंढ़बन्दी	कल्याणपुरा	9,410.00	9,410.00	18,819.00
74	गणपत मीणा की मेंढ़बन्दी	कल्याणपुरा	9,018.00	3,618.00	12,636.00
75	मोहर पाल गोपाल बलाई का जोहड़	कल्याणपुरा	21,169.00	21,168.00	42,337.00
76	दयाल का एनीकट	मारोची	3,260.00	-	3,260.00
77	रणजीत का एनीकट	मोरोची	3,260.00	-	3,260.00
78	सार्वजनिक जोहड़ी	मोरोची	1,890.00	660.00	2,250.00
79	गोपाल प्रहलाद का जोहड़	बन्धापुरा	14,727.00	18,001.00	32,728.00
80	हरकेश राम सहाय का पोखर/ मेंढ़बन्दी	बन्धापुरा	5,377.00	6,571.00	11,948.00
81	हरिया घटिया की तलाई	बन्धापुरा	11,092.00	13,556.00	26,648.00
82	कमलेश की मेंढ़बन्दी	बन्धापुरा	11,665.00	14,258.00	25,923.00
83	हजारी बैरवा काजोहड़	अमरगढ़	8,200.00	8,240.00	16,440.00
84	प्रेमबैरवा का जोहड़	अमरगढ़	4,025.00	4,027.00	8,052.00
85	बाल गोविन्दा का जोहड़	अमरगढ़	4,650.00	4,651.00	9,301.00
86	घूमस्या वाली तलाई	विशनाथपुर,खण्ड़ार सवाई माधोपुर	17,752.00	8,876.00	26,628.00
87	हरि गोठिया का जोहड़	घाटा विशनाथपुर खण्ड़ार, सवाई माधोपुर	31,000.00	31,491.00	62,491.00
88	लखपति प्रतिमा का जोहड़	घाटा,विशनाथपुर			

क्रसं	जोहड का नाम	गांव का नाम	संस्था	श्रमदान	कुल
		खण्डार, सवाई माधोपुर	8,600.00	8,620.00	17,220.00
89	मुकुट-गोपाल का जोहड़	भीमपुरा,खण्डार			
		सवाई माधोपुर	2,034.00	2,034.00	4,068.00
90	सार्वजनिक जोहड़	भीमपुरा, खण्डार			
		सवाई माधोपुर	19,298.00	9,649.00	28,947.00
91	घुमसारी जोहड़	भीमपुरा, खण्डार			
		सवाई माधोपुर	9,908.00	4,954.00	14,862.00
92	पीली पोखर	भीमपुरा, खण्डार			
		सवाई माधोपुर	15,720.00	7,859.00	23,579.00
93	हरिचरण की मेंढ़बन्दी	भीमपुरा, खण्डार			
		सवाई माधोपुर	10,507.00	10,507.00	21,015.00
94	ग्यारा का जोहड़	ड़गरा पटड़ी, खण्डार			
		सवाई माधोपुर	13,976.00	6,968.00	20,964.00
95	रामस्वरूप का जोहड़	रत्नों का पुरा	4,066.00	4,066.00	8,131.00
96	खेत तलाई	दयारामपुरा	9,800.00	9,881.00	19,681.00
97	कमलेश महेश का जोहड़	दयारामपुरा	12,250.00	12,286.00	24,536.00
98	सार्वजनिक तलाई	हटियाकी	16,379.75	5,473.75	22,214.50
99	नया एनीकट	हटियाकी	4,890.00	-	4,890.00
100	बत्ती लाल की जोहड़ी	हटियाकी	442.00	442.00	884.00
101	बैरवा की तलाई	हटियाकी	400.00	186.00	536.00
102	गोपाल गुर्जर की तलाई	हटियाकी	2,100.00	2,100	4,200.00
103	कल्याण ब्रजमोहन की तलाई	हटियाकी	3,790.00	3,791.00	7,581.00
104	हरिभोर केदार की मेंढ़बन्दी	हटियाकी	4,305.00	4,306.00	8,611.00
105	पुण्य कमल की मेंढ़बन्दी	हटियाकी	2,023.00	2,023.00	4,046.00
106	देवीलाल चिरन्जी लाल की मेंढ़बन्दी	हटियाकी	10,493.00	10,494.00	20,987.00
107	मोहर सिंह पुरण की मेंढ़बन्दी	हटियाकी	15,800.00	15,872.00	31,672.00
108	भगवान सिंह की तलाई	हटियाकी	3,600.00	-	3,600.00
109	महेश शर्मा का जोहड़	डुंगरी	10,055.00	10,056.00	20,111.00
110	जंगल का ताल	नैहेनयाकी	30,000.00	14,910.00	44,910.00
111	ब्रजमोहन गुर्जर	निभैरा	2,300.00	2,305.00	4,605.00
112	मोहन, कृष्ण मेंढ़बन्दी	भरपुरा	1,161.00	7,161.00	14,322.00
113	मोरेवाला ताल	खजूरा	1,86,215.00	1,18,783.00	3,04,953.00
114	बड़वाली पोखर	नहनियाकी	30,837.00	15,430.00	46,267.00
115	दीण्डा का ताल	रामवेली	2,40,676.00	-	2,40,676.00
116	रिद्धा का ताल	विरमका	1,22,255.00	-	1,22,255.00
117	सा. ताल	मरमदा	1,330	-	1,330.00

कुल जल संरचनाएं 369

श्रमदान - रु. 22,81,600 **संस्था - रु. 35,53,300** **कुल खर्च : रु. 58,34,900**

आभार

उन सभी का...
जिनकी प्रेरणा, समझ, श्रम, साधन, साधना और समर्थन से सपोटरा की 'डांग का पानी' संभव हो सका।

जितना बड़ा संकट
उतना बड़ा साझा